

20337  
लीलावती

بیلواوی  
रजा डाल चंदकी आज्ञानुसार

भाषा हर्द  
रजा के प्रयोजन

रजाशिव प्रसाद खितोर हिंदू की  
आज्ञानुसार अत्यन्त शुद्ध होय

स्थान लखनऊ  
दूसरी बार  
मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में मुद्रित

हुंद  
फरवरी  
सन १८७६

श्री गणेशाय नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ॥

अथ वाचिसार लिख्यते ॥ सोरठा चंद्र ॥

गणपति के अनुयाय ॥ गिरिजापतिगस्वरन सौं  
परम श्रीति परचाद् ॥ पाटी परपाटी रचत ॥१॥

॥ दोहा ॥ नगर सुरशिलावाद् शुभ । सुरसरि  
तीर निवास ॥ अहिना पूरि रही गही ॥ सहिमा

पुरसे वास ॥२॥ अनु गुरुवाद् ज्ञानगुरु । सुंदर  
सुधर सुच्छंद ॥ सुरपद सुजान सुसील नृप ॥

डालचंद्र कुलचंद्र ॥३॥ जिन जनगननें गहा  
जन । महा जनलनें चाह ॥ जाहि साह सब

जगतके ॥ मानत साहन साह ॥४॥ सन्मानी  
वानी सुधा । दानी लाज जहाज ॥ अनुगाहक

गंभीरचुन । गनी नसीब निवाज ॥५॥ तिन गो  
दीन अधीन हिजनागरपात अनाथ ॥ राव

चंद्र पै करि कृपा । कीनो अधिक मनाय ॥६॥  
अति आदर सनमान वसु ॥ वासलास अनतेल



कोटि १०००००००  
 शत १०००००००  
 ख १००००००००  
 निख १००००००००  
 महापद्म १००००००००  
 शंकर १००००००००  
 जलधि १००००००००  
 अतिन १००००००००  
 पद्म १०००००००००

अंकथानक्रम जोरियौ । कहैं संकलन सोइ ।  
 घटिकरियौ जो अंकते । अंक विवकलन होइ ॥१५॥  
 उदाहरन ॥ है अरु दसवती स पुनि । सात घाटि  
 शत तीन ॥ जोरि अंक सब फल करौ । सहस्र फल  
 तैं हीन ॥१६॥ न्यास ॥ २ ॥ जोरि तैं अये ३३७  
 याको हजार में <sup>२००</sup> घटाय <sup>१००</sup>  
 दिये तैं वाकी <sup>२००</sup> <sup>६६३</sup>  
 रहे ३६३ ॥ अथ गुन विधि ॥ सोरठा ॥  
 गुनौ गुन करि माइ ॥ गुन्य अंतके अंक कौ ।  
 पुनि गुन कहि सरकाइ । शेष अंक इकइक करौ  
 ॥१७॥ दोहा ॥ जासौं गुनिये सो गुनक । जो  
 गुनिये सो गुन्य । गुन्यो अंक सो गुनन फल । लहि  
 ये पुरे पुन्य ॥१८॥ उदाहरन ॥ पान्चतीन इक  
 अंक कौ । वारह सौं गुन सीत । यथा यानध-  
 रि जोरि पुनि । लेहु गुनन विधि जीत ॥१९॥ न्यास  
 गुन्य १३५ गुनक १२ ऐसे धरि के  
 यथा यान जोरि तै पाये गुनन फल

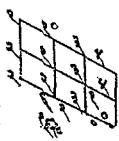
पर्य १०००००००००  
 गुनक १२  
 पहिले एक को वाह १२  
 ते गुन्यो भयो ते १३५ गुन्य  
 ऐसे ५ फिर गुनक  
 सरकाया भयो ते १६३  
 ऐसे ५ फिर तीन को  
 १० वाह तो गुन्यो भयो  
 ऐसे १३५  
 फिर गुनक सरकायो  
 भयो ऐसे १६३  
 सब पांच को वाह १२  
 सौं गुन्यो भयो ऐसे  
 १६२० ॥  
 और दूसरी सुरास विधि  
 जहां १२ गुनक और  
 १३५ गुन्य होइ तहां  
 एक चतुस्र क्षेत्र ऐसे  
 लिखिये

जो एक गुनक को गुन्यो  
 जो एक गुनक को गुन्यो  
 जो एक गुनक को गुन्यो  
 जो एक गुनक को गुन्यो  
 जो एक गुनक को गुन्यो

१	२	३	४
२	३	४	५

अथ भाग द्वार विधि ॥ दोहा ॥ गुन्यगुनक  
 की गुन्यौ फल ॥ भाज्य अंक सोरु जानि ॥ इक  
 भाजक इक भागफल ॥ गुनक गुन्य दोउ मानि  
 ॥ २० ॥ भाज्य अंक में घटिराके ॥ जै गुन भाजक  
 अंक ॥ विहि गुन कहि लिखि प्रथम फल ॥ पुनि  
 ले भाग निसंक ॥ २१ ॥ उदाहरन ॥ चौपाई  
 भाज्य अंक सोरु सै बीस ॥ भाजक वारह के  
 धरि सीस ॥ इहि विधि भाग लायो बुधि ईस  
 पायो सौ ऊपर पैतीस ॥ २१ ॥ न्यास २६२०

घेर एक एक अंक दूह और  
 के गुणपुत्र से गुनिके इकाई  
 लाभ की नीचे के लख्य से  
 और दहाई ऊपर के लख्य  
 से धरिये और दोनों मिल  
 रेखा के बीच बीच दीनिये  
 कही फल पाइये



- १ प्रथम भागफल एक गुनो भाज्यस  
घट्यो सो लिरव्यो ४
  - २ द्वितीय भागफल तिगुनौ ३ ६  
घट्यो लिरव्यो ६
  - ३ तीजौ भाग पच गुनौ ६  
घट्यो पायो फल ५ ६
  - ४ ३ ५ सो लिरव्यो
- यथा धान धरि जोरे ते पायो भागफल २३५

अथ वर्ग मूल लक्षण ॥ दोहा ॥ चातकोड  
 सय अंक कौ वर्ग कह्यै जानि । वहै अंक जिहि  
 सय गुण्ये, मूल नाहि पहि चानि । धा वर्ग विधि  
 सूत्र मूल अंतिके अंक कौ, कृति सिरला के धारि  
 वहै अंक पुनि दुगुन करे, से पअंक सब नारि १०  
 तिच सय को फल ही सधरि यथाथान चितला  
 ॥ मेंटि अंक वह अंति कौ, पुनि राशहि सरला  
 ॥ ११ ॥ दूजो अंक नु अव भयो, अंति अंक कौ  
 गीति ॥ तासौं करि पूरघ क्रिया लेहु वर्ग विधि  
 जीति ॥ १२ ॥ २६७ के वर्ग कौ न्यास ॥ जैसें  
 कह्यो तैसें पायो वर्ग ८८२०८

१				
२	३			
४	५	६	७	८
९	१०			
११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५
२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५
३६	३७	३८	३९	४०
४१	४२	४३	४४	४५
४६	४७	४८	४९	५०

अथ मूल विधि सूत्रावर्ग  
 पंक्ति के अंक सय आदि अंति  
 प्रत्येक ॥ विपसह सय पुनि  
 विपससह, चिन्ह करी स विवेक  
 ॥ १३ ॥ अंति विपस चिन्हांक  
 में, चटै सुवर्ग चटाउ ॥ तासु

अथ कवि गुणितो ॥  
 कल्प के द्वै समान अंश मा  
 आउस में गुणित ताके फल  
 वर्ग कह्यै और कृत कल्प  
 हैं ॥  
 २६७ के वर्ग की क्रिया सूत्र  
 विधि से ऐसे २६७ अंक कौ  
 अंक है २ ताको हत ४ ताको  
 सिधयो करि ताको दूनों  
 करि सेस अंक सय गुनाई ति  
 नसबको फल ति के ही सयस्यो  
 भयो ऐसे २ २ ६ ७  
 कर अंक ४ ४ ७  
 दोह कौ विटाइ २ ४ ७  
 करि राश कौ सर ४  
 कायो भयो ऐसे -  
 अथ नौ ४ के अंक  
 कौ फल निया  
 कीनी भयो ऐसे फल नदोह  
 कीनी  
 कौनी  
 भयो ऐसे  
 अथ तीस  
 २६७ री अंक  
 २६७ रान कौ रसो  
 नहु कावरी सिधस-  
 लो पायो वर्गांक ऐसे  
 याजीरु  
 सई ऐसे  
 २६७  
 २६७  
 २६७

\* राश कवि अंक समूह

१८२०६ को मूल विधि  
 अंश विपम सम चिन्हांक  
 करे ऐसे ६८ २० ६ अंक के  
 विपम चिन्हांक में दोड़ २ को  
 वर्गचार ४ घटत है सो घटा  
 ये ने बाकी रहे ऐसे ४८ २० ६  
 पायो मूल को अंक दोड़ करे  
 पहले पायो वाको हुनो करे  
 सम चिन्हांक तरे धरि भाग  
 लीनी ताको भाग फल पायो  
 ६ ताको पहिले फल २ के  
 पास यथा यान घटयो ऐसे  
 २६ अठ याको वर्ग द्वितीय  
 विपमांक ताई घटाया शेष  
 रही ऐसे ४१०६ फिर १६ को  
 हुनो करि नीसरे सम अंक तरे  
 धरि भाग ७ को पायो पुष्य  
 ७ को वर्ग नीसरे विपम चिन्हां  
 कतरे घटाई तीनों अंक मुह  
 अयो पायो मूलक फल २६७  
 याही अंक को वर्ग की नीसरे

वर्गके मूल कौं फल लहि प्रथक लिखाव ॥१४॥  
 तिहि फल कौं पुनि सम तरे, नेहु भाग करि दूना फल  
 जु मिलै ताको वर्ग, विपम तरे करि ऊन ॥१५॥

पुनि यह फल फल प्रथम संग यथा यान धरि  
 दून ॥ करि पुनि धरि सन संकतर, भाग लेइ  
 करि न्यून ॥१६॥ ऐरी पंगति सुहलौं, किया  
 करे वित लाइ ॥ एक वर्ग दुक भाग करि, लहौ  
 मूल विधि गाइ ॥१७॥ उदाहरन ॥ ८८२०६ के

मूलकौन्यास	८	८	२	०	६	पायो मूल अंक
वर्ग २ को	४					प्रथम फल
बाकी	४					दो फल दूसरे
भाग ६ गुनो	४	४	२			७ फल तीसरे
वाकी	४	२				२६७ दीक मूलकी
भाग ७ गुनो	४	१०	६			इति मूल

अथ भिन्न क्रिया विसम छेद विधि  
 दोहा ॥ स्वांशहि तजि प्रतिहार करि हर अरु  
 अंश गुनाव ॥ छेदन जब सम होइ सब, तब स





लवानुबंध कहिये जहां ह  
 नाकनं एकादिको अंश जो  
 लो अथवा घटायो चाहिये  
 मरा नौ तीन के आंक में एक  
 को चौथाई घटाइये तो यदि  
 लगे रहे निखिये तीन रूप  
 को चारिहासि गुनि एक रू  
 य घटाये नें भयो रूप एक रू  
 घटाइ को चौथाई तीन तीन  
 रूपाइ दो रूप एक ही चोथा  
 को चारि रूपाइ गुनि एक जोरि नें  
 भया रूप रूपा नव को चौथाई  
 गुण हो रूपाइ  
 रूपाइ जोरि व को उदाहरण  
 को पहिले  
 में नौ चौथाई को  
 रूसि जोरि अथवा  
 करि रूपाइ रूपाइ नौ रूपाइ  
 जोरि भय घटा करि करि  
 काज भाय रूपाइ मरये को  
 पय कर अथवा  
 नौ वहां जोरि  
 रूपाइ रूपाइ  
 भयो रूपाइ रूपाइ  
 रूपाइ नौ रूपाइ रूपाइ  
 रूपाइ नौ रूपाइ रूपाइ

छद्दि करि उपदर्से भये २२०० नाकी मई कौड़ी २  
 अथ लवानुबंध रूलावा पवाह विधि ॥  
 जहां रूप तैं वाढ़ घट अंश एकको होइ ॥ रूप  
 श्रीरहरगुनि करै अंशहि धनरिन सोइ ॥ २३ ॥  
 स्वांशजन जुत हरहिकरि करधांश गुनिभा  
 न ॥ २४ ॥ उदाहरण ॥ तीन एकके चरन घटि  
 एक चरन जुत दोइ ॥ करन करि लव अनुबंध  
 सैं करि सवर्ण यह जोइ ॥ २५ ॥ न्यास ॥ तीन  
 रूप कौ चौर हर तैं गुन्यौ और एक अंश घटायौ  
 मर ॥ ऐसैंती ॥ दोइ एकके चरन जुव काये  
 मर ॥ दू लरो उदाहरण ॥ चरन विलव  
 के जोत में नाको अरध मिलाव ॥ वसुलव  
 घट है विलव में रियि लव तीन घटाव ॥ २६ ॥  
 वसुलव घट दल में चहरनव सप्तान्शहि जोरि  
 ॥ करन करि तीनौ रंश कहु जुत घटि जिम सु  
 वीर ॥ २७ ॥ न्यास

१	२	३
४	५	६
७	८	९
गोरिखो	घटाइ	यहूतौ
	वेदा	तेरिखौ

नाका  
 गुन्यो मरये को  
 नाको बारह सैं उपवर्ण्यो  
 मरये को ३ उपवर्ण्यो  
 उदाहरण

अथ ऊरुधरहात अरवांश ऊन जुत क्रिया करि

कें भयो ऐसे 

१७	५६	११२
२४	१६८	११२

 अपवर्त्ते भवे

२	३	९
२	३	९

॥ अथ भिन्न गुनन सूत्र ॥

लव करि लव गुनि परस परहर करि हरहि गुन

द । हर भाज कलव भाज को भाग गुनन फल भाइ

॥ २८ ॥ उदाहरन ॥ दोइ विलव जुत सौं गुनौ

सप्तसांश जुत दोइ । वहर विलव दलव धरौ

गुनन लाभ जौ होइ ॥ २८ ॥ न्यास 

७	१५
३	७

गुने भये 

१०५
३५

 अपवर्त्ते भये 

५
२

 दूसरो

उदाहरन । 

१	९
३	३

 गुने भए 

२
६

अथ भिन्न भाग हार विधि । भाजका कक

अंश हर अदल बदल करि देइ ॥ भिन्न गुनन

विधि पुनि गुनद भाज्य संक फल लेइ ॥ ३० ॥

उ० सौत तिहाई को लहौ भाग पांच में भाइ ॥

विलवहि करि भागौ छलव कहौ भाग फल

चाइ ॥ ३१ ॥ न्यास 

भाजक	भाज्य
७	५

 भाजक अंश हार

वदलै ते भए 

भाजक	भाज्य
७	५

 गुने

यदाइव कोहि नै तिहाई में  
ते ताको ३  
घर करि  
ताको सानवो ७  
नौ और घटाइ देनी ताकी  
पिन्ना छवियर पहिले अथहर  
२ ताको ऊपर २  
गुन्यो मए २४ फेर खाटवें  
से सांश १ घटायो मए ७  
या करि कें ऊर्ध्वान् २ गु  
न्यो मए २४ फेर २४ सौं गु  
को ऊपर ७ फेर ७  
नो मए १६ फेर ७ मए या करि  
२ घटायो मए ७ या करि  
के ऊपर १६ फेर ७ मए  
मए ऐसे १६ फेर ७ मए  
५६ तें कियो मए २  
सौसा उदाहरन घटाइव  
जोरिवे लोहे सु पहिले अथ  
ऊपर घटाइ २ घटाइ  
धरने सपर २ घटाइ  
ऊर्ध्वान् सौं गुने मए ७  
हे ७ अथ ऊपर  
गुने ७ सांश जोरि क  
पौर गुन्यो मए २४  
ताको लप भयो ऐसे २

शुभवर्त अर ३० ॥  
 शेषवर्त अर ३० ॥  
 भाजक ३० ॥  
 भाज्य ३० ॥

योग	०	५	५	वीक
योग	५	०	५	वीक
भाग	भाजक	भाज्य	५	फल
	०	५	५	फल
गुनन	गुनक	गुन्य	०	फल
	५	५	०	फल
गुनन	गुनक	गुन्य	०	फल
	५	५	०	फल
परि	०	०	०	फल
मूल	०	०	०	फल
	गुनक	५	भाजक	
	०	जैसे	०	
		जैसे	०	

भयेपेते ७ रेसेही ३ ६ कौयाही कीया  
 तै पायो फल ३ अथ भिन्नवर्ग मूल ॥  
 अंशहार के वर्ग द्वै पृथक पृथक करि लेखि ॥  
 यही रीतिहै मूलकी भिन्नगुननविधिदेखि ॥३२॥  
 उदाहरन ॥ सात्त अरथ को वर्ग करि पुनि सा-  
 को कुरि मूल ॥ न्यास ॥ उनचासंतरचार कृत  
 रिषिदलपद जिन मूल ॥ ३३ ॥ वर्ग ६ मूल ३ ॥  
 अथ शून्य प्रकरी ॥ नभके भागरुजोग में  
 रहे अंक सोडू जानि ॥ शेष भाज्य नभं को नभं  
 गुननवर्ग नभं मानि ॥ ३४ ॥ नभं भाजक नभं-  
 गुनक जो किहू अंक को होइ ॥ जैसे कीतीसोर  
 ३ अंक सुजानौ लोडू ॥ ३५ ॥ उदाहरन ॥ खंग  
 निजोरि निज दल वट्टु रि करौ तीन कौ घात ॥ खं  
 की भागत्रे सठ भये को न अंश सो भ्रात ॥ ३६ ॥  
 न्यास ॥ गुनक ० अथक ३ गुनक ३ भाग ०  
 दृश्य ६ ३ शून्य गुनक और शून्य भाजक  
 दूरि करि कै जो अंक वच्यो ताको विलोम

शून्य के एक वा  
 अंक में शून्य जोरि नै सोर  
 प्रकरी है  
 और शून्य को वर्गवर्ग मूल  
 स्व शून्य के नाद -  
 और जो एक में शून्य को भा  
 या अथवा शून्य में एक को  
 भाग नीति तो भाज्य भा  
 जक जो के लो रहे -  
 और एक शून्य को गुनन  
 शून्य के जाइ  
 शून्य को अथवा शून्य  
 ही रहे  
 और जो अंक को गुणक  
 और भाजक दोनों शून्य  
 होइ सो एक जोका  
 लो रहे ॥



बिना

अंक दृष्ट करलना करि चउक  
 भहो जैरि इह ३ को  
 येन अज्ञान राश को ल  
 अपन लाभ राश को ल  
 अपनो दृष्टगनाइ कर  
 कर अंकवां दस्य को  
 को जैरि निरि राखि  
 जो कुट लाभ हाइ ना  
 लिन दृष्टको करि के  
 नहं यही किया काहक  
 को कहनात चउहर  
 इहां प्रक

अंक दृष्ट करलना करि चउक  
 भहो जैरि इह ३ को  
 येन अज्ञान राश को ल  
 अपन लाभ राश को ल  
 अपनो दृष्टगनाइ कर  
 कर अंकवां दस्य को  
 को जैरि निरि राखि  
 जो कुट लाभ हाइ ना  
 लिन दृष्टको करि के  
 नहं यही किया काहक  
 को कहनात चउहर  
 इहां प्रक  
 पायो लाभ ५५ कर इह ३ और  
 दृश्य इह ती गुनापु अ २०४  
 याद ४ लाभ को भाग ला  
 औ फई अज्ञान राश ४८१  
 दृश्य जाव के सब अंश कु  
 देव करि जोरि के एकमे न  
 घटाइव को तात्पर्य यह है  
 कि यह सब एक आक को  
 कतर है यात एकमे घटाये  
 में शेष को तैरा राक घट  
 होइ ॥  
 शेष नावमें इह कर्म ३६८  
 को इह प्रकल्पना के आध  
 १२० दीने वचे २०० ताके  
 नवनव दोइ ६० दीने वचे ६०  
 ताके चरन ३५ दीने वचे २०५  
 ताके दृष्ट लव घुन दीने वके  
 किल्या लाभ ४९ फिर इह ३६  
 और दृष्ट ६ गुनायो पाये  
 २३६० शने ४२ लाभ को  
 भाग लीनी पाइ राश १४५  
 शेष नावमें विलोम  
 विधि से तै दृश्य ६३  
 को हीन स्या  
 न के ६३ ॥  
 वर जोरा कीनी भए १७५ ॥  
 कर ६ हीन स्याने ५२५ ॥  
 की जोग कीनी भए २१० ॥  
 कर ३ हीन स्याने ३  
 ६० की जोग कीनी भए २३५ ॥  
 २३० की नी हीन स्याने ३  
 कीनी पाये राश ५५  
 होइ ॥

मिलि अरसठ दृश करलाग ॥४१॥ न्यास द ३  
 पांच गुन २५ तिहाई हीन १० दस को 

३	३	३
३	२	५

  
 भाग २ यामें दृष्टांश को ससंछेद करि जोरि भये ३३  
 इह ३ और दृश्य ६० गुने भये २०४ यामें ३३ लाभ  
 को भाग लीयो पायो राश अंक ४८० ॥ अथ इह  
 कर्मांतर दृश्य जात ॥ समच्छेद करि जोरि  
 लव एक मांदि करि हान ॥ फल को लीजे भाग  
 पुनि दृश्य इह सुनि ज्ञान ॥ उदाहरन ॥ पदम  
 राश को चरन पुनि त्रिलव पांच षट भाग ॥ हरि  
 हर रवि गिरजाहि देवचे छे गुण पद लाग ॥४२॥  
 न्यास 

१	१	१	१
४	३	५	६

 समच्छेद करि जोरि एकमे ते  
 घटाये वचे ३० दृश ६ इह १ करि गुनाइ ३६ को भाग  
 लिये पाए राश अंक १२० ॥ अथ शेष जात ॥  
 इह कर्म करि अथवा विलोम विधि करि अज्ञा  
 न राश को ज्ञान होत है ॥ और सुवाम विधि ॥  
 लवहर अंतरघात को दृश हर वचें भाग ॥ तुरगलेत  
 हु कहि देह पुनि राश अज्ञान सभावा ॥४३॥ इह दृश

अंक दृष्ट करलना करि चउक  
 भहो जैरि इह ३ को  
 येन अज्ञान राश को ल  
 अपन लाभ राश को ल  
 अपनो दृष्टगनाइ कर  
 कर अंकवां दस्य को  
 को जैरि निरि राखि  
 जो कुट लाभ हाइ ना  
 लिन दृष्टको करि के  
 नहं यही किया काहक  
 को कहनात चउहर  
 इहां प्रक

लवा पचाह सो  
 किया कीनी प  
 हिले अघर दोइ  
 रकीं काय हर एक सो  
 बन्यो और स्वारा एक  
 एक को दोइ न मने घटाइ  
 रोप रको ऊर्ध्व सो  
 गुनो भर रूप रसे  
 अघर रूप  
 यस्या घटाइ  
 य सो गुनो मयो तसे  
 रो हर सो यही किया कीनी  
 भयो रूप रसे  
 हर सो रूप रसे  
 यो मयो रूप रसे  
 घाह रूप रसे  
 यो रूप रसे  
 लीनो पाइ रूप रसे  
 अंक १५ ताकीति हाई ५  
 घाह १५ पंचमांश ३  
 रोप २ अंतर ६  
 यह इ एकमातर ६  
 भिद है दृश्य इष्ट के घात  
 से किया फन के भाग लीन  
 ते अज्ञान रण्य को बोध  
 होइ ॥

न ॥ दलके नव नव दोइ दै उदरे को दै पाव । पुनि  
 दस लव छह दोपके दै उ सठ हिय चाव ॥ ४४ ॥ न्यास  
 लौहर को अंतर 

१	२	३	४
५	६	७	८

 कीनी पाय 

१	७	३	६
---	---	---	---

  
 याको वध कीनी भए ८४ हर 

१	२	३	४
---	---	---	---

 और ह  
 श्य दै याको वध ४५ ३६ यामें ८४ को भाग लिए  
 पाई राश ५४० लवा पचाह करि दृश्य इष्ट गुनिनाम  
 की भाग लीये ह पायो अंक ५४० ॥ अथ विभेद  
 ज्ञात ॥ राश त्रिलव पुनि पंच लव दै कै कियो विवे  
 क ॥ इन्न दै को अंतर तिगुन पुनि दै फचो सु एक  
 ४५ ॥ न्यास 

१	२
३	४

 लन दै को अंतर ११ तिगुन कियो  
 अपवर्ते मए 

७	९	३
३	५	५

 ताको रूप अयो रसे  
 सम छेद करि एकमे ते घटाये पाये ११ दृश्य इष्ट  
 सुनाइ लाभ ११ को भाग लीनो पायो अंक राश १५  
 अथ संक्रमण ॥ जो पूरै कोई अंक दै अंतर  
 जोग सुनाइ ॥ अंतर घट बढ़ जोगमै करि दल  
 राश बंताइ ॥ ४६ ॥ उदाहरन ॥ जेना दुहू को  
 साठ है अंतर दस को मान ॥ राश दोइ ते कै ल

अंक १५ ताकीति हाई ५  
 घाह १५ पंचमांश ३  
 रोप २ अंतर ६  
 यह इ एकमातर ६  
 भिद है दृश्य इष्ट के घात  
 से किया फन के भाग लीन  
 ते अज्ञान रण्य को बोध  
 होइ ॥

पूर्व राशि राश्यावर ८ रा  
 राश्यावर ५० जोग ५० अर्थ ५०  
 महासूत्र राश्यावर पुनिदोऊ को  
 अंतर ४२ अर्थ २२ यह दूसरी  
 राश्या ॥  
 पुनक कौं साधो करि करि  
 पुनि ताको वर्ग दशांक में  
 मूलेद अथवर्तन करि जोरि  
 के ताक मूल में कर गुनका  
 र्ध जोरि दीनिये जो प्रच्छक  
 घाट कौनो होइ तो और पुन  
 कार्ध घटाइ दीनिये जो प्रच्छक  
 ने जोरो होइ तो शपाक कोल  
 सोइ अथवा राश्या  
 अथ करि घाट बाढ करि के को  
 मयुं यह है कि जो प्रच्छक ने दल  
 पुन नासो होइ तो पुन दल घटाइ  
 ने जोरो मूल पुन घटाया  
 होइ तो पुन दल जोरि ॥

कह संक्रमी सुजान ॥४७॥ न्यास गयोगदुहं  
 को ६० अंतर १० इन दोऊन कौं जोरि के साधो कियो पाई  
 एक राश ३५ पुनि दोऊन कौं अंतर करि साधो कियो  
 पाई दूसरी राश २५ ॥ अथ वर्ग संक्रमण  
 राश्यातर कौं भारालै वर्गांतर में सीत ॥ राशजोग  
 को लाभ लै पुनि करि पूरव रीति ॥४८॥ उदाहर-  
 आठतर दै राश कौं वर्गांतर सौ चारि ॥ सोहै  
 राशविचारिके चातुर चारु उचारि ॥४८॥ न्यास  
 वर्गांतर ४०० में राश्यांतर ८ कौं भारालियो पायो  
 राशजोग ५० ताकौं पूरव विधि करिके पाई राश  
 है ॥२८॥ अथ मूल शेषजात ॥ जो पूरव  
 कोइ राश कौं काह गुनक गुनाइ ॥ राश्यावरग में  
 जोरि वा घटि करि पोषयताइ ॥५०॥ पुन दल  
 कृत में जोरि दश पुनि ताकौं करि मूल ॥ पुनि  
 गुनिदल करि घाट बढ़ क्रम करि ताहि न  
 भूल ॥५१॥ उदाहरण राशमूल दल सात  
 गुन दैके उवर दोइ ॥ कहा राशवह कौनसी

सिंगरे पंडित लोड ॥ ५२ ॥ न्यास ॥ मूल गुन ३  
 दश २ गुणार्ध ३ वर्ग १६ दृश्य जो सौ भए ३ मूल  
 ताको ३ गुणार्ध ३ योग ३ अपवर्त्त भए ४ वर्ग १६  
 से ३ भयो राश अंक १६ ॥ अथ जोरि वे को उदा-  
 हरन ॥ मूल नौ गुनौ मिलि भये वारह सै चालीस  
 वर्ग अंक सो कौन सो जानत सकल बुधीस ॥ ५३ ॥  
 न्यास मूल गुणार्ध ३ वर्ग १६ दृश्य जोरि भए  
 ५० ५१ मूल ३ गुणार्ध ३ ऊन किये भए ३ अ  
 पवर्त्त ३ वर्ग १६ यह राश पाई ॥ अथ मूल  
 और भाग को सूत्र ॥ जो घट बढ़ निज लव  
 इन सौ होइ सुराश सभाग ॥ घट जुत करि लव  
 एक सै गुन दृश सै लै भाग ॥ ५४ ॥ दोऊ फल ए  
 भाग के दफ गन दक दृश मानि ॥ इन दोऊ सौ  
 करि क्रिया फिरि पूर्व विधि ठानि ॥ ५५ ॥  
 उदाहरन ॥ मूल दस गुनौ दृश्य को और अ  
 ठवौ भाग ॥ दान कियो तव छह बचे कौन सु  
 राश सभाग ॥ ५६ ॥ न्यास ॥ मूल गुन १० भाग ३

मूल गुन को अथ यही किजो  
 राश को मूल गुन द घट बढ़  
 होइ और राश को अथ यही  
 बढ़ लव नौ ताकी क्रिया यही  
 करि ॥  
 जैसे उदाहरन में पहिले म  
 ल गुन दृश और दृश दके को  
 लव को एक से घटये कौन  
 न दृश से भाग लिये नौ भयो  
 मूल गुन ३ और दृश ५० या  
 ही गुन अरु हय करि करि  
 के सोई पूर्व किया गुन द  
 वर्ग में दृश जोरि के ताकी  
 मूल निकाल के कर गुन दल  
 जोरि के ताकी वर्ग पाई राश  
 १५४ ॥



\* चैपरक कहिये जायें  
 नीन राश प्रगत होहि और  
 चौथी राश अजात राश जैसे  
 जोरते को फल नानाको  
 पाके फल नानाको  
 फल अजात है। नानी के ना  
 निवे की इच्छा और फल के  
 घात में प्रमान को भाग लिये  
 नै प्राइये चौथी अजात राश।  
 सुहर को सत्रांश गुनी।  
 सुहर के सत्रांश तिगुने  
 की चारि तोला केसर प्राइ  
 ए तौ नव सुहर की कती पैये।  
 चौ चौएली तोला केसर नव  
 सुहर की पैये तौ चार तोला  
 के की पैये प्रायो फल सुहर  
 को सत्रांश तिगुने चारि  
 तोला केसर को तोल ॥

\* मूल  
 युन २० ताको हल है  
 याको युन १० समर्थ करि है  
 हरा १० अयो १०  
 तौलो फल है चामे पूर  
 तौलो अयो नै भर  
 शुको फल है चामे पूर  
 युनार्थ १० नै भाग  
 १० भाग लीये नै भाग  
 १० ताको वर्ग सोई १०५॥

कौ एक में चदायो अपेष्टया करि कें मूल युन २०  
 में भाग लियो पाए १० यह मूल गुन भयो फेर १०  
 कौ दृश्य ६ में भाग लियो पाए १० यह दृश्य नान  
 भयो अथ मूल युन २० और दृश्य १० करि पूरव  
 क्रिया किये तै पाए राश्यां १०५॥ अथ चैरा-  
 शक ॥ कहि प्रमान इच्छा वहरि आदि अंत सम  
 जात ॥ फल संज्ञा है मध्य की इच्छा फल करि घा-  
 त ॥ ५७ ॥ तायें भाग प्रमान कौ लै इच्छा फल  
 लेह ॥ फल प्रमान वध इच्छ वर व्यस्त विराश  
 कएह ॥ ५८ ॥ उदाहरण ॥ सुहर सौतल्व तिगु  
 नकी केसर तोला चारि पैये तौ नव सुहर की  
 कती मिलै वजार ॥ ५९ ॥ न्यास <sup>प्रमाण फल इच्छा</sup>  
 इच्छा और फल गुने तै भए ३६ प्रमान को भाग  
 लियो तोला १५ पायो केसर को मान ॥ या उदा  
 रन में प्रमान इच्छा स्थान में सुहर समान जाति  
 है ॥ और तौ तोल समान जाते होइते ऐसे लिखि

प्रमान	फल इच्छा	ए प्राइ सुहर ३ चार तोला केसर
३६ तोला	३ सुहर तोला	

\* इहां उलटी क्रिया  
 तें मूलकी रास होइ कहि  
 तें हि ज्यो ज्यो वर बढती  
 नाइ त्यों त्यों मोल घटती  
 होइ ॥ \* यह उदाहरन की क्रिया  
 व्यस्त त्रै राशक करि सिद्ध  
 होइ कहि क्रिया की द  
 ज्यो प्रमान रूप है बहुत मूल  
 विचारतें शून होइ ॥  
 पंच राशक कहिये नोसें कां  
 प राश प्रगाट होहि और  
 छठी राश अज्ञात होइ और  
 यामें फल प्रमान ही के तरे  
 धर्यो जात है ना फल को  
 क्रिया समे इच्छा के तरे अ  
 इच्छा के तरे को हर प्रमान  
 के तरे ल्याइ के होइ फल  
 प्रमान यह इच्छा के तरे  
 जुदे गुनाइ के अल्प राश  
 फल को भाग यह राश  
 फल में लेके जो लाभ हो  
 इ सोइ अज्ञात राश  
 नाने फलदस राश  
 की वही क्रिया है ॥  
 इ प्रमान के तरे को शून  
 क लन जहा है ॥  
 इच्छा के तरे को शून  
 हा नहर ॥

को मोल ॥ अथ व्यस्त त्रै राशक ॥ मोल जीव  
 को वैस तें व्यस्त त्रै राशक होइ ॥ बहुत मोल ल  
 फल जहां वह फल लघु व्यय सोइ ॥ ६० ॥ उदाह  
 रन ॥ स्थानां सोरह वरस की वृत्ति सुहर यिया  
 ॥ ६१ ॥ वीस वरस की वृत्ति तौ केने मोल लहाइ

प्रमान	फल	इच्छा
१६	३२	२०

॥ ६१ ॥ न्यास  
 बुन्यो भय ५१२ इच्छा २० को भाग लियो पाई  
 २२५ ॥ दूसरी उदाहरन ॥ मोती ॥ मोती  
 सात परोइ होइ जु ऐसी सोलरी ॥ तिन मोतिन  
 की होइ पांच पांच की लर किती ६२ ॥ न्यास  
 प्रमान फल इच्छा  
 ७ २०० ५ व्यस्त की या करि पाई लरी १६

अथ पंच राशक ॥ पंच सप्त नव राश नें अ  
 फल हर वदलाइ ॥ पृथक पृथक उइ पच्छ  
 नि अथ ऊरध करि चाइ ॥ ६३ ॥ बहुत मूल  
 पच्छ में अल्प राश बंध भाग ॥ लै करे इच्छ  
 फल लहो वृद्धि वंत वड भाग ॥ ६४ ॥ उदाहर  
 ॥ एक मास सौ मूल को पाई इच्छा २० ॥

श्रव क्रिया कनिषा यो कालमात्र  
 के तरे जो फल और इच्छा  
 के तरे जो वर बदलने भयो  
 कनिषा १ ० दोऊ पच्छ  
 जुदे १०० १६ जुदे गुनाये  
 मर ६५ ५ परसे १००० १८  
 अल्प राश को भारा लियो  
 भयो रूप से ६५०० १००  
 वा फल का लक्षण १२ परसे  
 ही अज्ञान मूल परा मंदि  
 ला रूप परसे १०० १६  
 मर ५ ५८  
 हुनो रूप १ १३ फल जुदे  
 गुनाये १०० १६ बदलने भयो  
 ६५ ५ भयो परसे १००० १८  
 अज्ञान परा मान परसे ६५०० १००  
 पायो भाग फल १२  
 मान ६

सोरह को रवि मास में व्याज कहा कह सोह ६५  
 अथ अज्ञान व्याज की उदाहरण ॥

न्यास ॥

१	१२	फल ५ और हार ० बदल
१००	१६	

बदल कनि

५	०	भयो रूप से
१	१२	
१००	१६	

दोऊ पच्छ जुदे जुदे गुनाइ मर

०	५	
१००	१६	

रेसें १०० १६० अल्प राश को भारा लियो पाये

६८ ५ और अज्ञात काल को न्यास ॥

श्रव क्रिया कनिषा यो कालमात्र  
 १० और अज्ञात मूल में याही  
 क्रिया तै पायो मूल धन ३६  
 दूसरी उदाहरण। हंइ ॥ सनि अथ एक  
 मास में सौंको जो फल पंचमांश शुद्ध पांच  
 ॥ पंचमांश जुत तीन मास कह राडे वासड की

फल सांच ॥ ११ ॥ न्यास

५	५
१००	१०५

फल और हार बदलाइ दोऊ  
 पच्छ जुदे जुदे गुनाइ भिन्न  
 गुनन की या सौं पाए

५	५
१००	१०५

रैसैं ५२००० ५० ५०० ताकोरूपभयोऐसैं २ ५००

अल्पराश को आग लियो पाए ३३ अथ सप्त  
 राश नव राश को उदाहरन ॥ कविस ॥  
 आठ हाथ वीरघता तीन विलारजाको ऐसे पट  
 आठ जय सौके माल लहिये ॥ साठे तीन हाथ ल  
 वो चौरौ हाथ औध ऐसो एक पटक होके ते माल  
 कों विसहिये ॥ नवराश ॥ और थंभ तीस प्र  
 त्येक विद्या हाथ वूल सोरह अंगुरि चौरि पिंड  
 रावे कहिये ॥ सौ कों जो बिकाव और चौह स  
 थंभ ओके तीनौ मान चारि चारि घादि कहा  
 चाहिये ॥ २ ॥ न्यास

बेल	३	७
अरुण	३	३
उद	८	९
जाफर	०	०
भाव	२००	०

फल और  
 राश को मता  
 आने २४

पाई २३ ॥ न्यास नव राश  
 हरव कीया तैं पाये रूपैये २६ ३  
 अथ एकादश राश उदाहर  
 न ॥ दोहरा ॥ तीस थंस इक

फलहार वल दोऊ  
 पच्छ गुनेत भार ५०० २४  
 आगलीनो मयो रूप ५०० २४  
 पाए रूपैय  
 लिये आना पाई  
 ३३ २३

नव राशके फलहार  
 यद्वि दोऊ पच्छ गुनेत भार  
 ५०० २४  
 आग रूप ५०० २४  
 लाभ ३३ ३

कोत्त का दई मञ्जरी अष्टा कहा देहि छह कोस  
 कौ दूर्जे चौदह काठ ॥ ६ ॥ न्यास

नून	१४	१०
अरत	१६	१२
उन्नाई	१९	८
षुभ	३०	१४
कोस	१	६
मञ्जरी	८	०

पूरव क्रोया विधि ते पाई मञ्जरी  
 छ कोस की चौदह घंभ की ८  
 अथ भांड प्रगि भांड विधि  
 रीति भांड प्रति भांड में मध्य अंक बदलाय । पु-  
 नि पूरव विधि करि क्रिया ता फल कौ फल पाव  
 ६७ ॥ उदाहरन ॥ चौपई ॥ सोरह के मु नीन  
 सो आम ॥ इकके तीस अनार सुनाम ॥ दस  
 आंवन के किने अनार ॥ नीके करि कइ बुद्धि  
 विचार ॥ २ ॥ न्यास

१६	१
३०	३०
१०	०

मध्य अंक बद-  
 लियो रूपे से

१६	१
३०	३०
१०	०

दोऊ पद गुनि  
 अल्प राश कौ

१६	१
३०	३०
१०	०

भाग लीये पावौ फल १६  
 अनार ॥ अथ मिश्र विवहार प्रथम सूत्र  
 मान काल धन मान गुनि मिश्र काल फल घात  
 पृथक पृथक ये लिखि प्रथम जोग करौ पुनि भ्रा-  
 त ॥ ६८ ॥ पृथक दि गुनि धन मिश्र मै लेहु जोग

रसदश राश के फल हू  
 बदलि दाऊ पच्छ गुने नार  
 ६४५२२० ८०६६०  
 भाग लीये ६४५१२०  
 ८०६६०  
 फल ८

दोऊ पच्छ गुने नार  
 ६४०० ३०० भाग ६४००  
 ३००  
 पावौ फल अनार  
 ६६

कौमान ॥ पृथक् मूल पुनि व्याज कौ फल पावै वड  
 भाग ॥ ६८ ॥ उदाहरण ॥ एक मास शत मूल सै व्या  
 ज पांचके मान ॥ सहस्र मिलै जौ वरस सै  
 मूल व्याज कह्य जान ॥ ७० ॥ च्यास ॥ मानकाल  
 धन मान १०० गुने भये १०० फल ५ मिश्रकाल १२  
 दोऊ गुने भए ६० जुदेधरे 

१००	६०
-----	----

 जोग कियो  
 भए २६० सौ कौ दूजार नौ गुनि एक सौ साठ कौ  
 भाग लीयो पायो मूल ६२५ फेर साठ कौ क्रिया  
 कौनि पायो व्याज ३७५ ॥ और सूत्र ॥ मानकाल  
 अरु मान धन पहिलै गुनि वड भाग ॥ मिश्रकाल  
 फल घात कौ पुनि तासै लै भाग ॥ ७१ ॥ पृथक्  
 पृथक् तिहि खंड लिखि पुनि ता कौ करि जोग  
 खंड मिश्र धन वधहि पुनि हरै जोग धन लोग  
 ॥ ७२ ॥ उदाहरण ॥ रिन लीनौ जन तीन तै-  
 तीन मान कौ व्याज ॥ प्रथम पचेत्तर पुनि विनु  
 र वद्धर चलोत्तर साज ॥ ७३ ॥ सात मास दुक  
 कणए दूजे के दस मास ॥ त्रितिय रिनी कौ

३० काल प्रमान धन गुनि १००  
 फल मिश्रकाल गुनि ६०  
 को जोग १०० मिश्र धन १०००  
 तो १०० करि गुनि १०००  
 एक सौ साठ १०० कौ भाग ली  
 जो पायो मूल धन ६२५  
 और मिश्र धन १००० ६० सौ  
 पुन्यै ६०० एक सौ साठ ६०  
 को भाग लीनो पायो व्याज  
 मान ३७५

मान भाग ६३  
मान गुणिका नीचि ५३  
मान गुणिका नीचि ५३  
मान गुणिका नीचि ५३  
मान गुणिका नीचि ५३  
मान गुणिका नीचि ५३  
मान गुणिका नीचि ५३  
मान गुणिका नीचि ५३  
मान गुणिका नीचि ५३  
मान गुणिका नीचि ५३

सुगि रही पांचमांसकी आस ॥७४॥ तीनों वैद  
कटे दण्ड षट् षट् शत धन जोरि ॥ जुदे जुदे तिन  
के कहौ खंडे कहा बहोरि ॥७५॥ न्यास  
१ १० २ ५  
२० १०० १० १००  
३ काल ४ १ मान धन १०० गुने भए १००  
मिश्रकाल ७ १० ५ को अरु फल को घात  
कीयो भए ३५ ३५ ३५ सौ मै भारा लियो पा

७	७
२०	०५
५	मान

१ ३० २ ६ ३ १  
७ ३ १  
खंडे खंडे खंडे  
भाग फल सौ गुनाइतके जोग को भाग लियो  
पाए खंडे २५ २५ ६५ इन खंडानि में मूल  
घान मिश्रित हे प्रथम सूत्र करि अथवा पंच  
राश फरि जुदे करि लीजिए ॥ और सूत्र  
पृथक पृथक जन धनाहि नै मिश्र द्रव्य गुनि  
परि ॥ तिन धन गुन कौ भाग लै पृथक पृ-  
थक फल भाखि ॥७६॥ उदाहरन ॥ लै कौनों  
जागर निनि तीन जने धन जोरि ॥ एकौ धन

१५०० धनि  
१५०० धनि  
१५०० धनि  
१५०० धनि  
१५०० धनि  
१५०० धनि  
१५०० धनि  
१५०० धनि  
१५०० धनि  
१५०० धनि

	मूल	घान		मूल	घान		मूल	घान
	३७	५	२०	३७	५	६३	३५	७
	३७	५		३७	५		३५	७

अरसठ बुद्धि पंचासी तिहि ठौर ॥ १७ ॥ भए  
तीन सौ मिश्रधन सब करन मूल रखेत ॥ तित  
तीनों के भाग फल जुदे जुदे करि चित ॥ १८ ॥

न्यास ॥ मूल धन तीनों के 

५९	६८	८५
----	----	----

  
 मिश्र धन ३०० करि जुदे जुदे गुनि अए ऐसै  

१५३००	२०४००	२५५००
-------	-------	-------

 मूल धन जोग

२०४ कौ भाग लीनो पाए 

१५	१००	१२५
----	-----	-----

 यासै  
 मूल धन घटाए तै लाभ नाग पाओ 

२४	३२	४०
----	----	----

और रहत ॥ अदल बदल करिहार लव जोरि  
एक में भाग ॥ लै करि कुरत घटाइ दे काल मान

घड़ भाग ॥ १७ ॥ उदाहरन ॥ चारि फुहारे  
हीनै चास्यौ चारि प्रकार ॥ एक और दिन एक  
में दूजौ दल में चारि ॥ १८ ॥ पुनि तीजौ विनि  
यांश में चौथौ छठवै भाग ॥ चास्यौ इकठे जौ  
बुटै काल मान कहिलाण ॥ १९ ॥ न्यास

१	१	१	१
१	२	३	६

 हार और लव अदल बदल  
 कनि अए ऐसै 

२	३	३	६
१	१	१	१

अथ हर बुद्धि वी कदिय  
अथान सौ तीचे कदिये धार  
हारन को ऊपर करिके मम  
छठे कोर जोरिये जोर अथाने  
एक में भाग लीतिर नव  
काल मान को लाभ होइ म



पायल विषं जो अममहो  
 नीरुमये करि जो रज्जु नी  
 समये वन्यो इह है ॥  
 मित्र धन तेरह पाइ सवाती  
 न जानातस्ये ह्य ॥ ११ ॥ चासो  
 अरु चावर के भाव भाग १० सौ  
 मुन्यो भय ॥ १२ ॥ चामे भाग जो  
 ॥ १३ ॥ को भाग लीनी भएरति  
 ॥ १४ ॥ अरु पवते पायो  
 ॥ १५ ॥ चावर को येन ॥ १६ ॥  
 मृंग के भाव भाग १० करि मित्र  
 धन ॥ १७ ॥ मुन्यो भय ॥ १८ ॥  
 मनाय ॥ १९ ॥ को भाग लीनी  
 भय ॥ २० ॥ एक सौ चारि  
 ॥ २१ ॥ १०६ करि अरु पवते  
 पायो मृंग मोल १०३ करि  
 राशक करि के मोल १०३  
 निर रेती जो चावर  
 मनाय ॥ २२ ॥ फल ॥ २३ ॥ पायो  
 ॥ २४ ॥ को मोल १०३ अरु जो मृंग  
 ॥ २५ ॥ १०३ पायो १०३ अरु  
 ॥ २६ ॥ करि अरु पवते ३६  
 चावर ॥ २७ ॥ मृंग  
 ॥ २८ ॥ ३६

जोरिं भए ॥ ११ ॥ एक में भाग लीने पायो कांल मान  
 ॥ १२ ॥ और सूत्र ॥ मोल भाग को घात करि भाव  
 भाग लै भाइ ॥ पृथक पृथक लिखिता सुकौं युनि  
 करि जोग धराइ ॥ २३ ॥ पृथक भाग धन मित्र  
 युनि भाग जोग को भाग ॥ लि करि पैये मोल फल  
 तोल विराशक लाग ॥ २४ ॥ उदाहरन ॥  
 चांवर साठे तीन मन एक रूपैया मोल ॥ भाप मृंग  
 को आठ मन पैये पूरे तोल ॥ २५ ॥ पाधिक एक  
 मांगन लग्यो तेरह पाइ ल्याइ ॥ चांवर के द्वै  
 भाग दै मृंग एक लव भाइ ॥ २६ ॥ मोल  
 तोल दू तासु कौ गुदौ जुदौ समुकाइ ॥ वेगि  
 देइ यह रवीचरी लोग संग को जाहिं ॥  
 ॥ २७ ॥ न्यास ॥  
 भाग को घात कियौ  
 भाव को भाग  
 भए ॥ २८ ॥ फेर इन को जोग कियौ भए ॥ २९ ॥  
 फेर ॥ ३० ॥ मित्र धन और भाव भाग सौं

मोल रूपैया	१	१	मोल शुरू
भाग	३	६	भए ॥ ३१ ॥
भाव	१	१	लियौ

पातर	मृग
४	२
७	८

गुनाइ भाग जोग को भाग लीनी पायो पृथक मोल

मान 

१	७
६	१६२

 पुनि वैरागक करि पायो नेल मा

न 

७	७
१२	२४

 अथ और उदाहरन ॥ तोला ए

क 

७	७
१२	२४

 पूर की वतिस सुद्रा मोल ॥ चंदन

आना दोइ को पैये तितनुहि तोल ॥ ८७ ॥ आधे

तोला अगर हू है आना अयलगा ॥ इक कपूर

अरु अगर वसु. चंदन सोरह भाग ॥ ८८ ॥ ऐसी

धूप मिलावुदे. सोरह धन ले मोल ॥ जुदो जुदो

पुनि तासु को कहि दे मोल रु तोल ॥ ८९ ॥ अन्यास

	कपूर	चंदन	अगर	मोल भाग वध	<table border="1"><tr><td>१०</td><td>११</td><td>१२</td></tr><tr><td>१२</td><td>१२</td><td>१२</td></tr></table>	१०	११	१२	१२	१२	१२
१०	११	१२									
१२	१२	१२									
मोल	३२	६	६	भाव भारा फल							
भाग	६	६	६	पायो <table border="1"><tr><td>३२</td><td>३२</td><td>३२</td></tr><tr><td>१२</td><td>१२</td><td>१२</td></tr></table>	३२	३२	३२	१२	१२	१२	याकौ
३२	३२	३२									
१२	१२	१२									
भाग	३	१६	३	जोग भयो ३६ निअधन							

३६ पूरव किया करि पायो पृथक मोल फल

कपूर	चंदन	अगर	तोल मान	कपूर	चंदन	अगर
१४	८	८	अथ और	४	६६	३२
६	८	८		८	८	८

स्तुत्र ॥ दानरु नर गुनि परस्पर रतन सांरु

३६ पूर की भाव भाग ३२ या  
 मिश्र धन २६ गुनि १२२ या  
 में भाग जोग ३६ को भाग  
 लीनी पायो कपूर को मोल  
 ३२ ऐसी चंदन भाव  
 भाग ३२ करि गुन्यो ३२  
 में ३६ को भाग लीनी पायो  
 चंदन को मोल ३२ याही  
 किया करि के अगर हू अये  
 मोल तीनों रूप अगर  
 ३२ कपूर चंदन अगर  
 ३२ ३२ ३२  
 वैसे अब  
 वैरागक करि के वैसे तोल  
 जानिए ॥ कपूर ३२  
 अथ ३६ वतिस ३२  
 ३२ करि अयवर्ते पायो कपूर  
 ३ को तोल ३६ ऐसी  
 चंदन प्रमान फल ३२  
 पायो ३ ३ ३ इच्छा  
 फल ६६ ३२  
 प्रमान फल इच्छा  
 १ १ १ ३२  
 अयवर्ते ३२ ३२

मानिक च दार २५ के भए  
 १६३ धामते नील मानिक  
 को मोल ३२ दान कानो गोर  
 रहे १२० यामे १६ एक नीले को  
 मोल तथा १ एक मोती को  
 मोल तथा ६६ एक मानि को  
 मोल जोरि दीनो भयो धन  
 ३३३ ऐसेही नीले १० दार १६  
 भए १६० १६८ के तीन घाट शे  
 ४१२ में ३५ ११ ६६ ॥ जोरि  
 दिए भए सोई ३३३ मोती १००  
 के भए १०० नील १ घाट ६३ ३६  
 १६ १६६ जोरते भए सोई ३३३  
 ऐसेही पाणिह जानिए

घटाउ ॥ शेष भागलै दृष्टमें पृथक मोल समरुव  
 ॥ ६० ॥ उदाहरन ॥ मानिक वसुं दसं नील  
 मनि मोती सौमनि पांचे ॥ यह धन लीनो चारि  
 जत्र प्रीत परस्पर सांच ॥ ६१ ॥ इक इक दीनो  
 परस्पर निज निज धन तै वांटे ॥ तव सब मिलि  
 सग धन भए पृथक मोल कइ छांटे ॥ ६२ ॥  
 न्यास ॥ मानिक ८ नीले १० मोती १०० माणि ५  
 नर ४ दान १ शभिन्न इष्ट प्रकल्यो ६६ दान  
 नर गुन्यो भए ४ रतन में घटाये भये ऐसै -

मानिक	नीले	मोती	मनि
४	६	६६	१

६६ में भाग लीनो पायो  
 प्रत्येक मोल

मनि	घल्यो	नीलो	मोती
४२	१	१	१
३५	१६	१	६६

चारि की तुल्य धन भयो २३३  
 आय श्रेढी विवहार सूत्र ॥ एक आदि क्रम  
 संक को चहै जोरा जो कोइ ॥ एक जोरि के  
 राशि में राश अरघ गुनि सोइ ॥ ६३ ॥ उदाहरन  
 ॥ एक आदि नव अंत को कहा संकलन हो  
 इ ॥ एक जोरि नव में वहरि नव दल सौं गुनि

सोद् ॥ ८४ ॥ न्यास ॥ ८ मै २ जो सो भ १२ ० व्याकौ  
 ३ सौं युन्यो पायो नवके संकलन कौ फल ४५  
 और हूँ ॥ एक आदि संकलन कौ. जो च  
 हे जो कोद् ॥ है जत पद संकलन युनि. तीन  
 भाग लै सोद् ॥ ८५ ॥ ऐसै जो लौं चाहिये. चोग  
 जोग कौ भाग ॥ इक इक छेपक में बढौ. इक  
 आजक सै लोग ॥ ८६ ॥ न्यास ॥

संकलन कहिये एक आदि  
 क्रम संकली जो बिक सोद्  
 संकलन कदावे ॥  
 ८ के संक मै २ जोतिके  
 पदार्थ सं युनेतें पायो नवको  
 संकलन ४५ या संकलन को  
 संकलन जालौ चाहिये तो  
 ४५ जे है जोरे ते भए ११ याको  
 ८ के संकलन ४५ सौं युन्यो  
 ४५ तीन को भाग लीने  
 या ११ याह को जो संक  
 न चाहे तो ८ में तीन १  
 जोरि कै ११ संकलन सौं  
 युनि चारि को भाग लीने  
 मै पायो तीसरो संकलन  
 ४५ ऐसै जहां तई सं  
 कलन चाहिये एक एक  
 छेपक में सरु एक एक  
 आजक में बढाय नैं का  
 वे सिद्ध होइ ॥

एक आदि अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	एक जोरि के पदार्थ से युन दोनो दूसरी पंगति भई
प्रथम संकलन	१	३	६	१०	१५	२१	२८	३६	है जत पद संकलन युनि ३ को भाग ती सरी पंगति भई
संकलन जोग	१	४	१०	२०	३५	५६	८४	१२०	तीन जत पद संकल न युनि ४ को भाग तीथी पंगति भई
संकलन नोग कौ जोग	१	५	१५	३५	७०	१२५	२००	३०५	चार जत पद संकल न युनि ५ को भाग पान्चवीं पंगति भई
याहू कौ जोग	१	६	२१	५६	१२६	२५१	४२०	६३६	

इहां पद कहिये अंति  
 के अंक को नाव अंक को  
 वर्ग संकलन जान्या चाहिये  
 इहां पद संख्या दिन संख्या  
 की है ॥  
 बढ़ती तथा वय कहिए  
 नितनो नितनो पत्र दिन  
 दिन बढ़ती दान की निर  
 तातो ॥  
 अरु कहिये नेगे धन पहि  
 ले दिन दान की निर तातो ॥  
 चारि बुद्धा पहिले दिन है  
 के फिर दूसरे दिन पांच और  
 र बुद्धा बुद्धे - नो बुद्धा देली  
 तीसरे दिन पांच ५ और  
 बढ़ती करि १५ दीनि याही  
 क्रम से १५ दिन लो दान को  
 नेने नेगे धन पढ़हे दिन लो  
 नीलाको अंति धन कहिए  
 और जो पढ़हे दिन में नि  
 नये आठ में दिन दीनि  
 तातो मध्य धन कहिये  
 सब दिन की ठीक  
 सर्व धन ॥ ॥

और सूत्र ॥ वर्ग संकलन जो च है पद दूने इके  
 जोरि ॥ युनि ताको संकलन करि हर करि तीन  
 बहोरि ॥ ८७ ॥ न्यास ॥ पद ८ दूनी १८ एक १  
 जोर्यो १८ नव को संकलन ४५ सों गुन्यो भये  
 ८५५ तीन को भाग लीनो पाए २८५ याही  
 क्रिया सों एक आदि नद ताई के वर्ग संकलन  
 ऐसे १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

१	५	१५	३०	५५	८१	११०	१४५	१८५
---	---	----	----	----	----	-----	-----	-----

और सूत्र ॥ दोहा ॥ इक घट पद अरु व  
 ढंति वध सुख जुत लहि धन अंत ॥ पुनि  
 वरमें सुख जोरि दल करि मधि धन लहि संत  
 ८८ ॥ पद संख्या धन न अग्र युनि सब धन जोर  
 सुनाव ॥ उदाहरन ॥ चारि दान करि प्र  
 चम दिन बढ़ती पांच गिनाव ॥ ८८ ॥ पंद्रह  
 दिन लो यो दियो अंति मध्य धन भाषि ॥ कहा  
 भयो पुनि सर्व धन भाषि बुद्धि की साखि ॥ ९०  
 न्यास ॥ आदि धन ४ बढ़ती ५ पद १५  
 एक हीन पद १५ बढ़ती ५ सों गुन्यो ७५ सुख ४

जोर्यौ ७४ यह अंत दिन कौ धन भयो फिरि  
 यासैं मुख ४ जोर्यौ ७८ दल ताकौ ३४ यह  
 मध्य धन भयो फिर याकौ पद १५ सौं गुन्यौ  
 पायौ सर्व धन ५८५ और जो पद के सम दिन  
 होइ तौ मध्य धन कौ संभव नाही तहां मध्य  
 धन के अगिले पिछले धन के जोगार्थ कौ  
 लाभ होइ ताही सौं कार्य सिद्ध होइ ॥ अथ  
 अज्ञात मुख राश जानिवे कौ सूत्र ॥  
 मुख अज्ञात के ज्ञान कौ सब धन पद करि भा-  
 गि ॥ एक घट पद वय दल हि गुनि तामें चदि  
 वढ भाग ॥ १०१ ॥ न्यास ॥ अथ ७ वय ५ पद  
 १५ सब धन ५८५ यासैं पद कौ भाग लीनौ ॥  
 पाप ३८ एक हीन पद १५ वयार्थ ५ करि गु-  
 न्यौ पाये ३५ याकौ मध्य धन ३६ सै घटायो  
 पायौ मुख धन ४ ॥ अथ अज्ञात वय कौ  
 सूत्र ॥ सब धन में पद भाग फल नामै करि  
 मुख हीन ॥ एक रहित पद अरध कौ तामें

\* मध्य दिन आठवें दिन ॥  
 \* जैसे बाही उदाहरन तौ १४  
 दिन विनिये तो एक हीन प  
 ६२ सौ वय ५ गुनित ६५  
 मुख ४ जुत ६८ अंति धन  
 भयो फिर यासैं मुख जुत  
 ७३ दल ३३ यह मध्य धन  
 भयो यह सातवें दिन आ  
 ठवें दिन के धन कौ अरध है  
 ७ दिन ८ दिन  
 ३६  
 जोग  
 ताकौ दल ३३ याकौ पद १४  
 सौं गुन्यौ १०१ भयो सर्व  
 धन चौवह दिन कौ ५२  
 \* और जो दिन प्रमान  
 अरु बढ़ती औ सर्व धन  
 जानिए और पहिले दि-  
 न की दल अज्ञात होइ तौ  
 ताकी विधि न्यास तैं  
 जानि लीनि ॥

नवय गुणिक निकाल  
 अंतर के वरग में सब ध  
 वरार्थ एत उतर के  
 अंतर के वरग में सब ध  
 र के गको मूल निकाल  
 के मुख पदाय दीनिए शेर  
 में वय दल जोरि के नामें व  
 यकी भाग लिये नें पदका  
 न होइ ॥  
 जो काहू अंक को बहत  
 के काहू गुनक में गुनि गुनि  
 के ताकी ठीक नो कोइ हवे  
 ताकी जान्यो चाहिये ताकी  
 यह सूत्र है जैसे धार सुपाई  
 चायनी सोलह वर की हि  
 सावहे और गुणक के वरग  
 में दूनी दूनी राखे के  
 कि साव याही सूत्र सों होत  
 है जैसे कोइ हवे कि रख  
 सो सिनाइ दूनी दूनी दीनिए  
 सो सब धन कितनी होइत हो  
 करि के वरग सिद्ध धरिये वे  
 विषम अंक से नामें नें सू  
 पदाय करि गुनक किन्धु ध  
 रिए रेसो ॥ जो के वरि ध  
 वर के ताकी दलक  
 किहू वरग से ताकी ध  
 किहू वरग से ताकी ध  
 किहू वरग से ताकी ध  
 किहू वरग से ताकी ध

भाग प्रवीन ॥ १०२ ॥ न्यास ॥ स्व धन में-  
 पदके भाग को फल ३८ तामें मुख हीन ३५  
 में एकरहित प्रदार्ध ७ को भागफल पायो वय  
 ५ ॥ अथ अज्ञात पद को सूत्र ॥ वय दल  
 मुख अंतर वरग सब धन वय वध दून ॥  
 जोरि तासु को मूल लेतामैं मुख करिऊन ॥  
 ॥ १०३ ॥ तामें वय दल जोरि गुनि वय को  
 लीजै भाग ॥ लांभ होइ पद ज्ञान को जानै  
 सो वड़ भाग ॥ १०४ ॥ न्यास ॥ वय दल ५  
 मुख ५ या को अंतर ३ वर्ग ६ स्व धन  
 वय सों गुनि के दूनी की यौ भए ५८५० यामें  
 वर्ग ६ जोस्यो भये २३४०५ याको मूल  
१५३ यामें मुख ऊन की नी भए १५५ वय  
 दल ५ जोरि भये १९० वय ५ को भाग ली-  
 नो पाई पद संख्या १५ ॥ अथ काहू  
 गुनक में नित्य गुनाइ गुनाइ करि दै  
 वे को सूत्र ॥ विषम एक तत्रि गुन धरो सम



दल करि कृतधारि ॥ ऐसैं पद मिति शुद्ध लौं गुन  
 कृत् चिन्ह विचारि ॥ १०४ ॥ उलटि ऐं कसौं करि  
 क्रिया वरग गुनन को रीत ॥ फल द्रुक घट करि  
 तासु में द्रुक घट गुन हर भीत ॥ १०५ ॥ ता फल  
 कौं गुनि आदि सौं सय की ठीक वताव ॥ चाही  
 विधि यह कठिन अति सुगम करौ करि चाव ॥  
 ॥ १०६ ॥ उदाहरन ॥ द्वै दिने पहिले दिना दि  
 न दिन तिगुनौ दिन ॥ सात दिना कौ धन  
 कहौ केतौ भयो प्रवीन ॥ १०७ ॥ न्यास ॥  
 आदि उत्तर तिगुन पद ७ यह पद विष सां  
 कहै यातैं एक घाटि करि कै गुन चिन्ह धस्यौ  
 ऐसैं गु फेर शेष ६ सम अंक कौं आधौ करि  
 वर्ग चिन्ह धस्यौ ऐसैं य फेर शेष ३ विषस  
 अंक तैं एक उल करि गुन चिन्ह गु पुमि २ कौं  
 आधौ करि व फेर १ कौ वूरि करि गुन चि  
 न्ह धस्यौ गु भई चिन्ह बल्ली ५

गु  
 व  
 गु  
 व  
 गु

स्वके नीचे गुनक चिन्ह के  
 तहां तैं क्रिया आरंभ को तिर  
 तहां पहिलें एक को दै के  
 गुनक में गुनाए तै दोह  
 होय २ फेर दूसरे वर्ग  
 चिन्ह है तहां दै को वर्ग ४  
 भयो फिर तीसरे ह वर्ग  
 चिन्ह है तहां चारि को  
 वर्ग १६ भयो फिर गुनक  
 चिन्ह में १६ दै गुनक में  
 गुने तै भयो २४ फिर वर्ग  
 चिन्ह में पतीस को वर्ग  
 कीनी भयो १०२५ याते तै  
 एक घटायो १०२५ गुनक  
 दै में तै एक घटा दै के या  
 में भाग एक को लीते पाए  
 सोई १०२५ फिर आदि दै  
 की गुनौ शयो स्व धन  
 को प्रमान २०४६५



कीनी नीचें पहिलै गुन चिन्ह है यातें एक को  
 पहिलै ३ गुनक सौं गुन्यौ भए ३ फेर ताको व  
 र्ग कीनी भये ६ फेर तीन सौं गुन्यौ भये २७  
 फेर ताको वर्ग ७२६ फेर गुनक सैं गुन्यौ भए  
 २१७ ऐसें पदांक शुद्ध भयो यामें ते एक  
 घटायो २१६ गुनक हूँ सैं एक घाटि करि शे  
 ष २ को भागलीनी पाए १०८३ याको आ  
 दि धन २ सौं गुन्यौ भयो सब धन २१६  
 ॥ अथ अंक पाश ॥ अंक यान मिति मान  
 लहि एक आदि वय घात ॥ सोई संख्या भेद  
 है. रूप देखि विख्यात ॥ १०८ ॥ अंक जोग  
 सौं भेद गुनि. भाग यान मितिलेह ॥ यथा  
 यान धरि जोरि फल भेद जोग कहि देह ॥  
 ॥ १०९ ॥ उदाहरन ॥ दोई साँठ के भेद  
 कहु. भेद जोग पुनि भापि ॥ पुनि नव वसु  
 त्रय भेद कहु. नासु जोग की सापि ॥ ११० ॥  
 न्यास ॥ ३८ ॥ याके यान २ एक आदि

१२३४५६७८९१०  
 १११२१३१४१५१६१७१८१९२०  
 २१२२२३२४२५२६२७२८२९३०  
 ३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०  
 ४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०  
 ५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०  
 ६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०  
 ७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०  
 ८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०  
 ९१९२९३९४९५९६९७९८९९१००

वयांक 

१	२
---	---

 इनकी घात २ भए संख्या भेद २  
 ऐसे 

१८	८२
----	----

 अंक जोग १० याकौ भेद २ सौं  
 गुन्यौ भए २० यान मिति २ को भाग लीनौ  
 पाए १० यान दोइ सैं यथा यान धरि जोस्यौ  
 ऐसे 

१०
१०
११०

 भयो भेद जोग ११० ॥ दूसरौ  

६	८	३
---	---	---

 यान ३

२११४  
 २२४२  
 २३१४  
 २४३१  
 २५४१  
 २६१३  
 २७७६  
 ३२१४  
 ३३४२  
 ३४२४  
 ३५४२  
 ३६२५  
 ३७५४

एक आदि वयांक 

१	२	३
---	---	---

 इनकी घात ६  
 भए संख्या भेद ६ ऐसे 

६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०
---	----	----	----	----	----	----	----	----	----

४११३  
 ४२३२  
 ४३१४  
 ४४३१  
 ४५४१  
 ४६१३  
 ४७७६  
 ४८३२  
 ४९४२  
 ५०२४  
 ५१४२  
 ५२२५

अंक जोग २० भेद ६ सौं गुन्यौ भए १२० यान  
 मिति ३ को भाग लीनौ पाए ४० तीन यान सैं  
 यथा यान जोस्यौ 

४०
४०
४०

 भयो भेद जोग ४४४०  
 दूसरौ उदाहर 

४४४०
------

 न ॥ गदा संख  
 चक्र पदस, चारायुध सुज चारि ॥ अदल  
 बदल जो हरि धरै, तिहि वपु भेद विचारि ॥  
 १११ ॥ पूर्व क्रिया करि कै भये संख्या भेद  
 २४ सौर भेद जोग ६६६६० ॥ अत्य स्तन  
 ॥ निन यानन सैं अंक सम. तिन सब के करि

५३३१  
 ५४३२  
 ५५४१  
 ५६१३  
 ५७७६  
 ५८३२  
 ५९४२  
 ६०२४  
 ६१४२  
 ६२२५

वीक सोई ६६६६०

कीनी नीचें पहिले गुन चिन्ह है यातें एक को  
 पहिले ३ गुनक सौं गुन्यो भए ३ फेर ताको व  
 र्ग कीनी भये ८ फेर तीन सौ गुन्यो भये २७  
 फेर ताको वर्ग ७२६ फेर गुनक में गुन्यो भए  
 २१८७ ऐसैं पदांक शुद्ध भयो यामैं ते एक  
 घटायो २१८६ गुनके हू में एक घाटि करि जे  
 य २ को भागलीनो पाए १०८३ याको आ  
 दि धन २ सौं गुन्यो भयो सर्व धन २१८६  
 ॥ अथ संक पाश ॥ अंक यान मिति मान  
 लहि एक आदि वय घात ॥ सोई संख्या भेद  
 है. रूप देखि विख्यात ॥ १०८ ॥ संक जोग  
 सौं भेद गुनि. भाग यान मिति लेइ ॥ यथा  
 यान धरि जोरि फल भेद जोग कहि देइ ॥  
 ॥ १०९ ॥ उदाहरन ॥ दोइ साँठ के भेद  
 कहु. भेद जोग पुनि सापि ॥ पुनि नव वसु  
 त्रय भेद कहु. नासु जोग की सापि ॥ ११० ॥  
 न्यास ॥ ११० ॥ याके यान २ एक आदि

~~१२३४५६७८९१०~~  
~~१२३४५६७८९१०~~  
~~१२३४५६७८९१०~~  
~~१२३४५६७८९१०~~  
~~१२३४५६७८९१०~~  
~~१२३४५६७८९१०~~  
~~१२३४५६७८९१०~~  
~~१२३४५६७८९१०~~

वयांक 

१	२
---	---

 इनकी घात २ अण संख्या भेद २

२१३४  
 २१४७  
 २३१४  
 २४३१  
 २३४१  
 २४१३  
१३७७६  
 ३२१४  
 ३४४२  
 ३२२४  
 ३१४२  
 ३४४२  
 ३४२१  
१८५५४

ऐसे 

२८	८२
----	----

 अंक जोग १० याकौ भेद २ सौं

गुन्यो भए २० यान मिति २ की भाग लीनो

पाए १० यान दोह में यथा यान धरि जोस्यो

ऐसे 

१०
१०
११०

 भयो भेद जोग ११० ॥ दूसरो 

६	८	३
---	---	---

 यान ३

एक आदि वयांक 

१	२	३
---	---	---

 इनकी घात ६

भए संख्या भेद ६ ऐसे 

६८२	८२६	२६८	६८२
-----	-----	-----	-----

अंक जोग २० भेद ६ सौं गुन्यो भए १२० यान

मिति ३ की भाग लीनो पाए ४० नीन यान में

यथा यान जोस्यो 

४०
४०

 भयो भेद जोग ४४४०

दूसरो उदाहर 

४०
४४४०

 न ॥ गदा संख

चकरु पदस, चारयुध सुज चारि ॥ अदल

वदल जो हरि धरें, निहि वपु भेद विचारि ॥

१११ ॥ पूरुष क्रिया करि कै भये संख्या भेद

२४ और भेद जोग ६६६६० ॥ अत्य स्तन ॥

॥ निन यानन में अंक सम. तिन सब के करि

४१२३  
 ४१३२  
 ४२१३  
 ४२३१  
 ४३१२  
 ४३२१  
२५४४२  
भेद २४ की वीक  
६६६६०  
 अंक जोग १० याकौ  
 भेद २४ सौं गुन्यो भये  
 २४० यान मिति ४ की  
 भाग लीनो पाए ६०  
 चारि यान नें यथा  
 यान धरि जोस्यो ऐसे  
 ६०  
६०५५५५  
वीक सोई ६६६६०

भेद ॥ प्रथम भेद में भाग लै. भेद विशेष अखेद  
 ॥ ११२ ॥ भेद जोग की रीत पै. पूरब विधि ही जान  
 न ॥ अंक पाश संक्षेप करि. इतनी ही लै.  
 मान ॥ ११३ ॥ उदाहरन ॥ दोइ दोइ इक  
 एक मिति. तिनके कितने भेद ॥ भेद जोग  
 पुनि तासु कौ. हमसौं कही अखेद ॥ ११४ ॥  
 न्यास ॥ 

२	२	१	१
---	---	---	---

 पूरव रीत सौं अंक वा  
 के भये भेद २४ जिन घान में सम अंक इहां  
 पहिलें दोइ घान में सम अंक तिनके भेद २  
 फिर और दोइ घान में सम अंक तिनदू-  
 के भेद २ दोनो की जोग ४ पहिली क्रीया  
 के भेद २४ में भाग लीनो पाए भेद ६ ऐसैं  
 २२११ ११२२ २११२ १२२१ २१२१ ११२२  
 अरु भेद जोग ८८८८ ॥ दूसरो उदाहरन  
 चारि आठ पुनि पांच अरु पांच पांच मिति  
 जोइ ॥ तिनके संख्या भेद अरु भेद जोग  
 कह सोइ ॥ ११५ ॥ न्यास ॥ ४८५५ ५ इहां

\* अंक जोग ६ भेद ६  
 सौं गुनो भर ३६ घान मिति  
 ४ की भाग लीनो ८ कौ  
 चारि घान में यथा घान ४  
 रि जोस्यो भर ६६६६६

\*  
 अंक जोग २७ भेद  
 २० करि मुजो ५७  
 घानिनि ५ कोमालो  
 नो पाए १८ पांच घा  
 नसें यथा घान धार  
 जोरे ३५

पूरब विधि करि भेद १३० तारीं घान तीन स  
 म अंक नैं उपजे जे भेद ६ तांको भाग लीनो  
 पाये संख्या भेद २० रेसैं लख

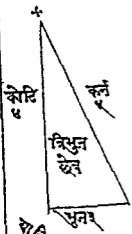
५५५४८	५५५८४	५५८५४	५५४५८
५८५५४	५४५५८	५५४८५	५५८४५
५८५४५	५४५८५	५८४५५	५४८५५
४५५५५	४५८५५	४८५५५	८५५४५
८५४५५	८५५५४	८४५५५	४५५८८

इनको जोग ११४८८८ ॥ अथ क्षेत्र व्य  
 वहारा रंभ ॥ त्रिभुज क्षेत्र चतुरंस्त में,  
 लघु भुज को भुज नाम ॥ सच्य भुजा कों  
 कोटि कहि दीर्घ करन अभिराम ॥ ११६ ॥  
 कोटिरु भुज कृत जोग पद करन मान है  
 जान ॥ वर्गान्तर श्रुति कोटि कौ मूल मानि  
 भुज मान ॥ ११७ ॥ करन वर्ग भुज वर्ग के  
 अंतर को पद कोटि ॥ समुहनि गिनौ या

चतुरंस्त क्षेत्र में त्रिभुज  
 कहिये को वास्तव्य यह है कि  
 जा चतुरंस्त क्षेत्र में त्रिभुज  
 बाबर होहिता चतुरंस्त में  
 जो त्रिभुज लक्ष्मिये ताको  
 के कोन सस्ये होत है याही  
 त्रिभुज को इहां काम है या  
 त्रिभुज में हो रखा अरु एक  
 कोन वाके बीचको सस्ये हो  
 अरु तिराखी रखा अरु एक  
 कोन याकी के तिरिखे होत  
 है रेसैं चतुरंस्त

हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज  
 हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज  
 हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज हे भुज

गिनत कौं होव नतामै खोदि ॥ ११८ ॥ उदा-  
 हरन ॥ क<sup>५</sup> कोटि चारिभुज तीनै कौ,  
 करन कहौ विजु खोदि ॥ कोटि  
 करन मै भुज कहौ भुजा करन तै कोटि ॥  
 ॥ ११९ ॥ न्यास ॥ भुज ३ कोटि ४ इन कौ वर्ग  
 जोग २५ ता कौ मूल ५ सोई करन मान भ-  
 यो ॥ फेर करन और कोटि के वरगन कौ  
 अंतर ६ या कौ मूल ३ सोई भुज मान भयो  
 ॥ फेर भुज ३ और करन ५ के वरगन कौ  
 अंतर १६ ता कौ मूल ४ सोई कोटि  
 मान भयो ४ ॥ अन्य उदाहरन ॥  
 ॥ सवा तीन है कोटि जहं भुज हू तितनी  
 जानि ॥ तहां करन को मान कहु पंडित  
 सुधर सुजान ॥ १२० ॥ न्यास ॥ इन कौ  
 वर्ग जोग दोह कर अपवर्ते भए  
 याके सुद्ध मूल कौ अभाव है तहां  
 करनी गत विधि तौ मूलानु मान पायो-



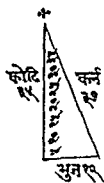
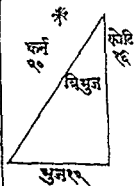
या त्रिभुज मै तीनो भुज  
 बराबर को सब नही  
 है भुज बराबर है सकै  
 कल्पना करिए

४३७  
४। ८००

अथ करनी गत विधि सूत्र

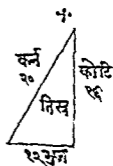
॥ लव अरु हर गुनि फिर गुनौ. यड़े इष्ट-  
कृत मांह ॥ फेर गुदौ करि लिखि धरौ. तासु  
मूल की मांह ॥ १२१ ॥ इष्टरु हर के घाल कौ  
गुनि यामैं लै भाग ॥ या कौ फल सोइ मूल जाहि  
करनी गत विधिलाग ॥ १२२ ॥ न्यास ॥ भुज  
कोटि वर्ग योग १६८ लव हर गुने तैं अए  
१३५२ वड़े इष्ट १०० के वर्ग १०००० करि गुल्यौ  
अए १३५२०००० बाहु कौ सुह मूल जाहि-  
यातैं निकट मूल मांह पाई ३६७७ यामैं हर  
८ और इष्ट १०० के वध ८०० कौ भाग लीनौ  
ऐसैं ३६७७ पायो भाग फल सोई ४। ४७७  
यही कर्न मान भयो ॥ अथ काल्पित भुजते  
अनेक कोटि कर्न उपजावु वे कौ सूत्र  
॥ इष्ट भुजा निति दून करि. दूजै इष्ट गुनाव ॥ ए  
क रहित कृत इष्ट कौ. तामैं भाग लहाव ॥ १२३ ॥  
लाभ तासु कौ कोटि है. कोटि इष्ट वध मांह ॥





भुजा घाट करि कर्न लहि विभु करनी गत छांह  
 ॥ १२४ ॥ उदाहरन ॥ वारेह भुज के खेत में  
 जै जै कोटि रू कर्न ॥ विभु करनी गत संभवे ते  
 द्वै विधि करि वर्न ॥ १२५ ॥ न्यास ॥ इष्ट भुज  
 या को दूनी २५ दूजे इष्ट २ सौं गुन्यो भये ५८  
 इष्ट वर्ग एकरहित ३ को भाग लीनी पायो  
 कोटि मान १६ पुनिया कौं इष्ट सौं गुन्यो भये ३२  
 भुज १२ घटाये तै पायो कर्न मान २० और  
 तीने की इष्ट कल्पना करि तै दूनी भुज २५ सौ  
 गुने ७२ या में इष्ट वर्ग एकरहित ८ को भाग लीनी  
 तै पायो कोटि मान १६ पुनिया कौं इष्ट ३ सौं गुन्यो  
 भए २७ भुज १२ घटाये तै पायो कर्न मान १५ ॥  
 अथ हृतीय प्रकार ॥ और इष्ट को  
 भाग लै इष्ट भुजा छत सांह ॥ इष्ट  
 ऊन जुन दल लहौ कोटि कर्न की छांह  
 ॥ १२६ ॥ न्यास ॥ इष्ट भुजा १२ को  
 वर्ग १४४ में और इष्ट २ की भाग लीनी

पाए १२ तामें दृष्ट २ घटाव के दल कीनौ पा-  
 यी कोटि मान ३५ फिर दृष्ट जोरि कै द-  
 ल कीनौ पायो कर्न मान ३७ चारि के  
 दृष्ट करि २६।२० छह के दृष्ट करि ६।१५  
 अथ कल्पित कर्न कोटि भुज उप  
 जाइवे कौ सूत्र ॥ श्रुति दूनौ करि दृ-  
 ष्ट गुनि तामै लीजे भाग ॥ दृष्ट वर्ग दृक्  
 जोरि कौ मिलै कोटि कौ लाग ॥ १२७ ॥ कोटि  
 दृष्ट वध हीन श्रुति जानौ भुजा प्रमान ॥ सामित  
 संभवे कोटि भुज इहिं विधिसुधर सुजान ॥ १२८ ॥  
 अथया ॥ लै इक जुत कृत दृष्ट कौ कर्न दून  
 मै भाग ॥ फल श्रुति अंतर कोटि फल दृष्ट  
 घात भुज लाग ॥ १२९ ॥ उदाहरन ॥ कर्न बीस  
 के कोटि भुज जिते जिते कधि सोइ ॥ विधि  
 अनेक जे संभवे करनी गति सहिं होइ ॥ १३० ॥  
 न्यास ॥ कर्न २० दूनौ ४० दृष्ट २ गुनि ८० यामें  
 दृष्ट वर्ग एक जुत ५ कौ भाग लीने तें प्राई कोटि द

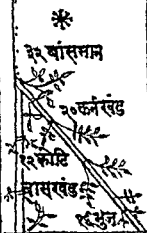


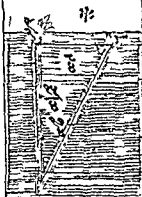
और कोटि १६ इष्ट गुणित ३२ में कर्न २० घाटि  
 किये तै पायौ भुजमान १२॥ दूँसरी न्यास  
 कर्न २० दूजे ६० में इष्ट २ वर्ग ४ एक जुत ५  
 कौ भाग लीने ते फल ८ तै कर्नान्तर भयो  
 कोटिमान १२ और फल ८ इष्ट २ वध १६  
 भुजमान भयो ॥ और ३ के इष्ट में कोटि १६  
 भुज १२ इहां भुज कोटि कौ नाम भेद है  
 स्वरूप भेद नाही ॥ अथ कोटि भुज कर्न  
 जानिये कौ सूत्र ॥ इष्ट दोइ कौ वध  
 दुगुन कोटि रू श्रुति कृत जोरा ॥ भुज  
 प्रमान जौ चाहिये वर्गन करौ वियोग १९९  
 न्यास ॥ इष्ट २३ वध ६ दुगुन १२ यह को  
 टि भई और इष्टन के वर्गन कौ जोरा कर्न  
 १३ अरु वर्गीतर भुज ५ ॥ अथ कोटि  
 कर्न योग कौ भिन्न जानिये कौ सूत्र  
 भूमि वर्ग में बांस कौ साग लाभ सो पाइ ॥  
 बांस माहिं करि ऊन जुत दल श्रुति कोटि

कर्न २० दूजे ६० में इष्ट ३  
 वर्ग एक जुत १० कौ भाग  
 लीने ते फल ४ में कर्नान्तर  
 भयो कोटिमान १६ और  
 भागफल ४ इष्ट ३ वध १२  
 भयो भुजमान १२ याको  
 नाम यह है किये और ते  
 ये सो इष्ट कल्पना करिये ना  
 में धर्मज्ञांक सिद्ध होइ



घटाइ ॥ १३२ ॥ उदाहरण ॥ चारुहाय व-  
 तीसै कोटि लग्यौ भुवभ्रम ॥ अग्रमूल  
 बिचजौ धरा पाई सोरह सग्र ॥ १३३ ॥ वांस  
 खंडे को मानकहु ॥ छीलफ जरी मरुतार ॥  
 एक कोटिदक करनसों दोऊ खंड विचार  
 ॥ १३४ ॥ न्यांस ॥ मुज १६ वर्ग २५६ वांस  
 ३२ कौ भाग लाभ ८ याको वांस में जोग  
 बल कर्न २० अरु लाभ वांस में ऊन हल  
 कोटि १२ ॥ अथ मुज कर्न जोग  
 और कोटि जनि तैं न्यारे न्यारे जा  
 निवे को मूत्र ॥ भीत वर्ग में व्याल को  
 भाग लाभ सो पाइ ॥ व्याल माहिं करिऊन  
 नुत दल मुज कर्न यताइ ॥ १३५ ॥ उदाहर-  
 ण ॥ चौपई ॥ नव कर की इक उन्न-  
 त भीत ॥ तापर बादुर गायत गीत ॥ भी-  
 तमूल तैं निकस्यो सांप ॥ सत्ताइस कर  
 जाकौ साप ॥ वेग बोल धनि सुनिअहि कान





॥ उलटि गह्यौ वह वेंन निदान ॥ कहि अहि  
 कितनो सुइं खुइ रह्यौ ॥ कितने उलटि सु-  
 दादुर गह्यौ ॥ न्यास ॥ भीतर ८ वर्ग २१  
 सांप २९ को भाग फल ३ व्याल जो गार्ध ३५  
 कर्न भयौ अरु लाम ऊनार्ध सुज भयौ १२

॥ अथ कोटि कर्नान्तर और सुज जा-  
 ने तै न्यारे न्यारे जानिवे कौ सूत्र ॥

सुज कृत् में सुति कोटि कौ अंतर हर फल  
 लेइ ॥ अंतर में सो घाट बढ़ करि दल फल  
 रुहि देइ ॥ १३६ ॥ उदाहरन ॥ आध हाथ  
 ऊंचौ जलज जल ऊपर मन रंज ॥ पवन  
 लगे कुफि वूडि गौ द्वै कर पै सो कंज ॥ १३७ ॥  
 ॥ कोटि कर्न कौ मान कहु सोई जल नले  
 मान ॥ चलि वूडन कुफि कमल की सुज  
 प्रमान सो जान ॥ १३८ ॥ न्यास ॥ सुज  
 दरग ४ यामें अंतर ३ कौ भाग लीनो-  
 पायो फल ८ यामें अंतर ३ घाट करि

दल कीनौ पायो कोटि मान १५ और  
अंतर जोगार्थ कर्न मान पायो १६

अथ कसु कोटि और भुज जाने ते  
तीनो प्रमान जानिये को सूत्र ॥

ताड़ तालके अंतरहि. ताड़ घात करि ले.

॥ फल में दूनो ताड़ हर कपि उछलनि  
कहि देह ॥ १३८ ॥ उदाहरन ॥

सौ कर के डुक ताड़ ते. उतस्यो डुक कपि  
धाड़ ॥ हैसै कर पै ताल लगि. जल हित

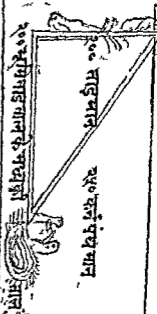
पहुंच्यो जाड़ ॥ १४० ॥ तरु पर ताकी वान  
री. पहिले उड़ी अकास ॥ पुनि श्रुति पथ

सम चाल वै. पहुंची निज पति पास ॥  
१४१ ॥ ताकी उछलनि मोहि कह. शेष

कोटि को सोड़ ॥ करन मान पुनि वेग कह.  
निहि मिलि सम गति होड़ ॥ १४२ ॥ न्यास  
ताड़रु ताल को अंतर १०० ताड़ मै घात  
१०००० हुने ताड़ २०० को भाग लीये पाई

१० कोटि के प्रमान जल गहर  
१० और कर्न के प्रमान कर्न  
तु जाल में ॥

१० कपि  
उदाहरन

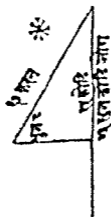


कपि उल्लनि ५० याकीं ताड़ु में जोड़े तैं  
 भयो कोटि मान १५० यतैं अरु भुज तैं पावौ  
 कर्न मान २५० समगत भई ३००

अथ कोटि भुज जोग जाने तैं और  
 कर्न जाने ते न्यारे प्रमान जानिबे

को सूत्र ॥ वाहु कोटि जुत हुतहि घटि  
 शुव रुत दूने मांह ॥ शेष सूत्र जुत घाट  
 जुत चरध कोटि भुज द्वां ॥ १४३ ॥  
 उदाहरन ॥ तैरु जहं भुज कोट जुत  
 सत्रह करन प्रमान ॥ पृथक पृथक नहं  
 कोटि अरु भुज के मान दरवान ॥ १४४ ॥

न्यास ॥ कर्न वर्ग को दूनी ५२८ यागें भुज  
 कोटि के जोग को दग ५१८ घटाये तैं शेष  
 ४८ के मूल ७ में भुज कोटि को जोग नूको  
 जोग दल भयो कोटि मान १५ अरु मूल  
 भुज कोटि जुतान्तर १६ दल भुज मान ८  
 ॥ अथ नंद नाना र्थ सूत्र ॥ कोटि दोह



के घात में. कोटि जोग को भाग ॥ लाभ सुलं  
 व प्रमान है कर्न जोग भुजलाग ॥ १४५ ॥ कोटि मु  
 जा के घात में कोटि जोग को भाग ॥ फल भुज  
 खंड प्रमान कहू. लंब दुहूं विसलाग ॥ १४६ ॥ न  
 दाहरन ॥ पंदरह दस है कोटि जहं. दृष्ट भुजा  
 पर होइ ॥ तिहिं श्रुत जत थल लंब कहू. अरु  
 भुज खंडे दोइ ॥ १४७ ॥ न्यास ॥ दुहूं कोटि को  
 घात १५० तामें कोटि जोग २५ को भाग फल  
 सोई लंब प्रमान पायो ६ अरु याकी दृष्ट भुजा  
 ५ को दोनो कोटि सौंगन्यो भये १७५ ॥ ५० यामें  
 कोटि जोग २५ को भाग लीनेतें पाए भुज खंडे  
 दोइ २३ और दृष्ट भुजा दस राखिये. तो खंडे.

४१६ ॥ अथ क्षेत्र शुद्धा शुद्ध परीक्षा  
 खेत चतुर्भुज त्रिभुज में. असम भुजनि को.  
 जोग ॥ जहां खेत संभव कहैं. बडे अज्ञते लोग  
 ॥ १४८ ॥ खेत चतुर्भुज में भुजा. वारह. छह  
 है तीन ॥ जहां असंभव खेत को. त्रिन करि माप



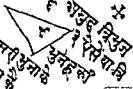
खंडे खंडे खंडे  
 खंडे

अथ क्षेत्र शुद्धा शुद्ध परीक्षा  
 खेत चतुर्भुज त्रिभुज में. असम भुजनि को.  
 जोग ॥ जहां खेत संभव कहैं. बडे अज्ञते लोग  
 ॥ १४८ ॥ खेत चतुर्भुज में भुजा. वारह. छह  
 है तीन ॥ जहां असंभव खेत को. त्रिन करि माप

Handwritten notes and signatures at the bottom of the page, including the name 'श्रीमान्' and other illegible text.



दोनी भुजा तीसरी भुजा के  
 वरावर हैं तब तब सभ के  
 से होइ ॥  
 \* और जो कदाचिद ला  
 अक्षमि के घटि नसई तो  
 क्षमि को लाभ के बडइ कैर  
 लक्ष्मीर औरिण प्रावाधा  
 होइ याको शान था उदाहर  
 ने जानि लेइ ॥  
 दोहा ॥ सतरह दस है बहु  
 मरु नव धरती जिहि खेत  
 तिहि प्रावाधा लव मरु खे  
 न लाभ चिग चेत ॥ ११ ॥ उम  
 न जेन २३ भूमि ७ की गुणि  
 १०० भूमि ८ को भाग लाभ  
 २१ धर्म भूमि जोरि दल की  
 अ प्रावाधा उन १० की १५  
 मरु दसरी प्रावाधा ने लाभ  
 २१ भूमि ८ के घटि नही तब  
 नही धर्मि ८ लाभ १२ के घटाइ  
 दल की नी पाई रिण प्रावाधा है  
 रति ६ फिर स्वामाधा मरु बहु  
 के बरगन के शतर प्रायो ६५ न  
 को मूल लव प्रायो ८ भूमि ८  
 घात १२ दल ६  
 खेत फल १६



प्रवीन ॥ १५६ ॥ त्यो ही अनुं नव तीन पेट त्रिभुज  
 खेत में खोटे ॥ सम कि भुजा यौ खेत की. घरि  
 लूँदो मुख मोट ॥ १५० ॥ अथे त्रिभुज स्पष्ट  
 फल ज्ञान सूत्र ॥ त्रिभुज खेत में दुःख  
 जुत. तिन अंतरहि गुनाइ ॥ वाहु तीसरी भू  
 मि कहि. ताकी भाग लहोइ ॥ १५१ ॥ लाभ  
 भूमि को जोग अरु अंतरदल जो होइ ॥  
 आवाधा संज्ञा भई दुहुं भुजा की सोइ ॥ १५२ ॥  
 स्वावाधा कृत वाहु कृत अंतर को जो मूल  
 लव संज्ञ तिहि भूमि बध. दल फल स्पष्ट न  
 भूल ॥ १५३ ॥ उदाहरन ॥ तेरह पंदरह  
 द्वे भुजा. चौदह छित जिहि खेत ॥ तिहि आ  
 बाधा लव केहु. फल स्पष्ट पुनि चेत ॥  
 १५४ ॥ न्यास ॥ दोनी भुजा को जोग २५ अंतर  
 २ करि गुन्यो ५६ भूमि १६ की भाग लीनो प्रायो  
 फल ४ याको भूमि में जोरि कै दल कीनी पाई  
 आवाधा ८ भुज पंद्रह की अरु फल ४ की

१३ वधी भुज  
 फल ३६  
 १५ आ भु १३ तीर भूमि  
 त्रिभुज खेत  
 के दोह भुजा के जोग  
 की नीने स्वात्पीनीव  
 शि उनात है ताको नाम  
 लव है और प्रा तीसरी भु  
 जाकी नाम भूमि है और भू  
 के दोना लव जो नव के  
 दुस और

पादप ताकीनाम आवाधादि

भूमि में अंतर करि दल कोनी भर्द दूसरी  
 आवाधा ५ भुजंतरह की फेर भुज अरु स्वावा  
 चा के वर्ग के अंतर को मूल पायो लंबमान  
 १२ या को भूमि में गुनि दल कोनी पायो खेत  
 को स्पष्ट फल २४ ॥ अन्यविधि ॥ तीनी  
 भुज को जोरि कै दल करि धरि घल चारि  
 ॥ त्रिभुज तीनटां घाटि करि शेष परस्पर  
 सारि ॥ १५५ ॥ ताको मूल निकसि लहि  
 शुद्ध त्रिभुज फल सोइ ॥ ये यह विधि चोवा  
 हु में न करि अशुद्ध फल सोइ ॥ १५६ ॥  
 न्यास ॥ तीनी भुज के जोग ४२ को दल २२  
 चारि टां व धरि कै तीनी भुजा घाटि करि कै  
 शेषांक परस्पर गुनि फल पायो ७० ५६ ऐसे

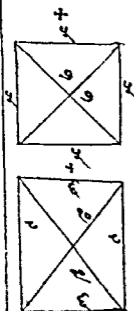
३३	३१	३३	३९
८	६	७	२१

घाट कोनी शेष  
 गुने अरु ७० ५६

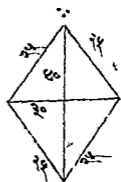
याको मूल २४ सोई स्पष्ट फल जो पाहिले  
 भयो हो ॥ अथ चतुर्भुज खेत फल

१५ १३  
 आवाधा भुज  
 पादप को स्पष्ट फल २४ जोरि  
 जा त्रिभुज में कोटि भुज कर्न हो  
 हि ना त्रिभुज में कोटि भुज चा  
 न दल स्पष्ट फल होइ यह सु  
 गल विधि ही लो लंब आ  
 वाधा उपजाए है ते होइ दुई  
 अरु तीनी भुज को जोरि कै  
 दल करि याइ सूत्र करि होइ  
 हे जोसे या त्रिभुज में संबन्ध  
 है खंडे भय सोइ खंडे भु  
 ज कोटि रूपी भएतव दो  
 नो त्रिभुज न को कोटि भु  
 ज घाट दल पाए ३० ५४  
 याको जोग भयो सोई  
 स्व खेत को स्पष्ट फल २४  
 लंब और आवाधा उप  
 जाइते को तावय बही है  
 कि लंब और आवाधा  
 कोटि भुज रूपी है ॥

जहां बराबर चारिभुज. श्रुति है तुल्य सु  
 जान ॥ तुल्य चतुर्भुज खेत है. ताको नाम  
 सुजान ॥ १५७ ॥ आयत ॥ है है स-  
 न्मुख को भुजा. जहां बराबर होइ ॥ श्रुत  
 हू ताके तुल्य है. खेतायत कहि सोइ ॥  
 १५८ ॥ इन दोनी विधि खेत में. करै कोटि  
 भुजघात ॥ लाभ खेत की स्पष्ट फल जानि  
 लेहु विख्यात ॥ १५९ ॥ उदाहरन ॥  
 पांच पांच के चारिभुज करन सात कछु  
 जासु ॥ आयत ॥ छह छह वसु वसु  
 चारिभुज, दस श्रुत फल कहि तासु ॥ १६० ॥  
 ॥ न्यास ॥ तुल्य चतुर्भुज में कोटि ५  
 भुज ५ को बध खेत स्पष्ट फल २५ और  
 आयत चतुर्भुज में कोटि ८ भुज ६ को-  
 बध स्पष्ट फल ४८ ॥ अथ अन्य सूत्र  
 बाहु बराबर चारिभुज. असम करन  
 जिहि खेत ॥ तहं नाना फल संभवे. श्रुति



घट बढ़ मिति हेत ॥ १६८ ॥ इक श्रुति ताकी क  
 ल्यि करि ताकी कृत करि हीन ॥ अज कृत चौगुन  
 माहिं फल मूल द्वितीय श्रुति कीन ॥ १६९ ॥ दुहुं  
 करन वध दल लहौ फल सपष्ट इहिं खेत ॥  
 असम वाहु श्रुति खेत कौ अब सुनि फल वित  
 चेत ॥ १७० ॥ सूधी अज कौ भूमि कहि सन्तुख  
 अज मै जोरि गलंब माहि पुनि घात करि तिहिं  
 दल नै फल तोरि ॥ १७१ ॥ प्रथम उदाहरन  
 ॥ चास्यौ अज पल्लीस मै इक श्रुति कल्यौ  
 तीस ॥ दूजे श्रुति की मिति कहौ खेत लाभ  
 पुनि ईस ॥ १७२ ॥ न्यास ॥ अज २५ के वर्ग  
 ६२५ ॥ के चौगुने २५०० मै कर्न ३० कौ वर्ग ९००  
 घाटि किये तै शेष १६०० को मूल ४० दूसरौ  
 कर्न भयो ॥ दोनौ कर्न कौ घात १२०० को  
 अर्ध भयो खेत फल ६०० ॥ दूसरौ  
 उदाहरन विषम चतुर्भुज कौ ॥  
 वादस छिति ग्यारह बदन है अज तेरह





मानस १५  
 मानस चतुर्विंशति १५  
 १ सोपुनि २१ को  
 मंगल ॥  
 १ व्यासकी २५७  
 सोपुनि २५७  
 यामि १५०  
 तनि ते भयो लिये  
 भाग  
 २२ १५०  
 २५७ सोपुनि  
 २५७ सोपुनि  
 २५७ सोपुनि  
 २५७ सोपुनि  
 २५७ सोपुनि

व्यास सात की परिधिकहः सूक्ष्ममूलविचार  
 ॥ परिधि लाभ तैपुनि कही ॥ उलटि व्यास विस्तार  
 ॥ १९० ॥ **न्यास** ॥ सूक्ष्म किया ते पाई -  
 परिधि २२ १५० अरु मूल २१ पुनि चाईस -  
 परिधि की सूक्ष्म व्यास २१ ३५७ अरु स्थूल  
 व्यास १ ॥ अथ वृत्त खेत फल गोल  
 पिष्ट फल गोल मध्य घन फल ॥  
 व्यास चरन करि परिधि वध, वृत्त खेत फल  
 होइ ॥ व्यास परिधि की घात जो, गोल पिष्ट  
 फल सोइ ॥ १९१ ॥ गोल पिष्ट फल व्यास  
 वध : तामै छह को भाग ॥ गोल गर्भ घन  
 फल सुफल, जानि लेइ वड़ भाग ॥ १९२ ॥  
**उदाहरन** ॥ वृत्त खेत अरु गोल जो सात  
 व्यास को होइ ॥ तहां खेत अरु स्थूल को  
 तल घन फल कह सोइ ॥ १९३ ॥ **न्यास** ॥  
 सात व्यास के खेत को सूक्ष्म फल  
 स्थूल ३५७ ॥ गोल पिष्ट फल सूक्ष्म २१ ॥

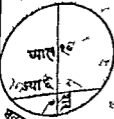


खेत  
 खेत को  
 सूक्ष्म फल १ व्यास को  
 तने याले अरु सूक्ष्म  
 परिधि २१ १५० सोपुनि  
 पायो फल तै २१ १५० याकी  
 रूप यो तै २१ १५०  
 तस्थूल फल १ को २१  
 की गुनी मयो तै ३५७  
 १५७ ताकी रूप ३५७  
 और गोल पिष्ट फल तल  
 के लिये सूक्ष्म परिधि  
 ३५७ को व्यास १  
 को गुने तै पायो फल ३५७  
 भाग लिखे न भयो सोई  
 १५७ अरु स्थूल फल  
 तल व्यास सो गुने भयो  
 १५७ और गोल घन फ  
 ल जानि ले सो गोइ

मानस १५  
 मानस चतुर्विंशति १५  
 १ सोपुनि २१ को  
 मंगल ॥  
 १ व्यासकी २५७  
 सोपुनि २५७  
 यामि १५०  
 तनि ते भयो लिये  
 भाग  
 २२ १५०  
 २५७ सोपुनि  
 २५७ सोपुनि  
 २५७ सोपुनि  
 २५७ सोपुनि

बात

जो रेखा परिधि के है लखे  
छोटे बड़े करे भारेवाकी ज्या  
तथा नीचा तशा है करुष  
इं ज्यावाते परिधि पर्यंत जो  
व्यास को दूक है ताकी शर  
करुष है करुवा परिधि के  
इन लो नाम धरु है ॥



उदाहरन की व्यास व्या  
स १० ज्या ६ जोग १६ अंतर  
१६ से गुने ते शर ६६ को दू  
ल १० याको व्यास न घटाय  
ते शर पर याको दल पायो शर  
ममान शर शर व्यास घट  
कीनी शर १० का शर १० करि  
गुनी पावे याको गुन ३ को  
दुगुनी पायो ज्या ममान ६  
फेर ज्या दन ६ का गुन १० ने  
शर १० को शर १० पायो  
शर १० को शर १० पायो  
व्यास नानु ३६

स्थूल २५४ गोल मध्य घन फल पायो ऐसे  
स्थूल १७२ ॥ अथ व्यास अरु  
ज्या तें शर ज्ञान सूत्र ॥ ज्यारु व्यास  
के जोग अरु अंतर वध को मूल ॥ व्यास  
मां हि घटि शेष दल शर कहि ताहि न भूल  
॥ १७४ ॥ पुनि शर घट करि व्यास में शेष फेर  
शर घात ॥ तासु मूल कौं दुगुन कहि ज्या  
परमिति विख्यात ॥ १७५ ॥ पुनि ज्या दल के  
वर्ग में शर हर फल शर जोरि ॥ व्यासलास  
स्तहि परस्पर मीनौ जानि बहोरि ॥ १७६ ॥  
उदाहरन ॥ ज्या मिति छह दस व्यास  
मिति कहु शर परमिति तासु ॥ शररु  
व्यास तै ज्या कही ज्या शर तें कहु व्यास  
१७७ ॥ व्यास १० ज्या ६ तें  
शर १ पुनि शर व्यास तें पाई ज्या ६  
तें व्यास १० ॥ अथ वृत्त खेत रे  
भुजादि नव भुज पर्यंत

जानिवे को सूत्र ॥ दोई सहस्र मिति  
 व्यास की, वृत् खेत जो होइ ॥ सम त्रिभुजा  
 दिनवांतके भुजमिति कह सव सोइ ॥ १७८ ॥  
 जुइ इनके गुणक, तिनसै व्यास गुनाव  
 एक लष बीस सहस्र को भाग लेइ फल पव  
 ॥ १७८ ॥ वृत् व्यास २०००

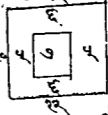
श्रेव	गुणक	भाजक	एकभुजको प्रमाण
विभुज	२०३८२३	२२००००	$\frac{२०३८२३}{२२००००}$
चतुर्भुज	८४८५३	२२००००	$\frac{८४८५३}{२२००००}$
पंचास्र	७०५३५	२२००००	$\frac{७०५३५}{२२००००}$
षट्भुज	६००००	२२००००	$\frac{६००००}{२२००००}$
सप्तास्र	५२०५५	२२००००	$\frac{५२०५५}{२२००००}$
अष्टास्र	४५८०२	२२००००	$\frac{४५८०२}{२२००००}$
नवास्र	४२३२	२२००००	$\frac{४२३२}{२२००००}$

अथ चाप क्षेत्र फल सूत्र ॥ जीयागा





\* जोगफल कहिए  
 मुख और तल की लंबाई  
 जोरि के मुख तल की जो  
 ऊर्ध्व के जोग भेगुने ते जो  
 फल १५ +



\* धनहस्त कहिए जा विंड  
 की लंबाई चौड़ाई गहराई  
 तीनी बराबर दोहिं  
 \* जादत खात की मुख  
 व्यास १४ और परिधि ४४  
 होइ और तल व्यास ७  
 ऊपर परिधि २२ होइ और  
 रेख २२ ता खात की मुख  
 तब फल भयो २५४ और  
 दोनी परिधि जोत ६६  
 व्यास जोत २२ याकी  
 फल ३४८ ऐसे तीनी  
 फल भए २५४ ॥ ११ ॥ ३४८  
 तीनी की सब छेद करि  
 जोने ते भए १०८३ या  
 की छेदों लंबा १०८३  
 याकी १२ वेध ती  
 उन्नी पायो रत

लीनी पायो फल ११।६।३। आपुस भै गुने  
 ते पायो खात घन फल १६८ ॥ अथ विनु  
 सीढ़ी को चतुर्भुज खात फल सूत्र  
 मुख फल तल फल जोग फल तीनी फल  
 को जोग ॥ ताको छठवौं अंश गुनि पिंड माहिं  
 फल भोग ॥ १८५ ॥ उदाहरन ॥ मुख रवि  
 दस तल पांच छह सात उंचाई होइ ॥  
 तासु घात घन हस्त फल, नीके करि कह  
 सोइ ॥ १८६ ॥ न्यास ॥ मुख लंबाई १२  
 चौड़ाई १० फल १२० तल तूल ६ विस्तार ५  
 फल ३० दोनी की तल जोग १८ विस्तार  
 जोग १५ फल २७० ऐसे भये तीनी फल  
 १२० ॥ ३० ॥ २७० ॥ याको जोग ४२० याको  
 छठवौं अंश ७० ताको सात उंचाई सौं गु  
 न्यो पायो खात घन फल ४६० या भांति  
 के छत खातहू को याही विधि करि फल  
 आनिये ॥ अथ सूची अग्र खात फल

विगत फल १०८३

\* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती  
 \* रत खात काहिए सती



सूत्र ॥ मुख्य सम फल को वेध यध-ताकी  
 तीना भाग ॥ चौ भुज सूची अग्र को खात  
 लाभ लहि लाग ॥ २०७ ॥ उदाहरन ॥  
 रवि भुज चारौ वेध नव खात लाभ कह सोइ  
 ॥ रत खात मुख्य व्यास दस पांच वेध कह  
 होइ ॥ २०८ ॥ न्यास ॥ प्रथम चतुस्रखात  
 को मुख्य फल २४६ को ८ वेध में गुने भयो  
 घन फल २२६६ को सूची फल त्रतियांश ३३३  
 ॥ न्यास ॥ रत सूची छत्र को व्यास १० की  
 परिधि ३६३९ को मुख्य फल व्यास चरन ५  
 गुनित ३६३९ पांच वेध सौ गुनित ३६३९  
 याको त्रतियांश सूची फल ३ के भाग लिये  
 ते पायो ३०८ ॥ अथ चित विवहार  
 ॥ चित घन फल में ईंट के घन फल को ले  
 भाग ॥ भाग लाभ सुई ईंट मिति जानि लेह  
 बड़ भाग ॥ २०९ ॥ ईंट उंचाई भाग फल  
 भीत उंचाई माह ॥ लाभ तरा मिति को

रत सूची खात को व्यास १०  
 ताकी परिधि ३६३९  
 करि उपवर्त भए ३३३  
 को व्यास चरन ५  
 पायो मुख्य फल ३६३९  
 पांच वेध सौ गुने ते  
 गुनित ३६३९  
 याको त्रतियांश सूची फल ३  
 के भाग लिये  
 ते पायो ३०८  
 अथ चित विवहार  
 चित घन फल में ईंट के  
 घन फल को ले भाग  
 भाग लाभ सुई ईंट मिति  
 जानि लेह बड़ भाग  
 ईंट उंचाई भाग फल  
 भीत उंचाई माह  
 लाभ तरा मिति को

लहो. सवै बुद्धि बल छाह ॥ १८० ॥ उदाह-  
रु ॥ ईंट लंबाई पौन कर चौड़ाई कर आध  
॥ उच्च आठवों अंश जिहि घन फल ताको  
साध ॥ १८१ ॥ आठ लंबाई जासु चित पांच  
चौड़ाई मान ॥ तीन हाथ जिहि उच्च कड़  
ईंट तरा प्रमान ॥ १८२ ॥ न्यास ॥ ईंट  
लंबाई ३ चौड़ाई ३ उंचाई ३ घन फल ईंट  
को ३ चित लंबाई ६ चौड़ाई ५ उंचाई ३  
घन फल १२० आसैं ३ को भाग पाई ईंट मिति  
२५६० अरु ३ में ३ को भाग पाई तरा मिति  
२४ ॥ अथ ककच विबुहार ॥ अग्र  
मूल जुत दल गुनी काठ दल नै जोड़ ॥ पुनि  
चीरनि सौ गुनि हरो, चौबिस कृत करि सोइ  
॥ १८३ ॥ उदाहरन ॥ सोरह अग्ररुर्वीस  
जड़ सौ अंगुल जिहि दूल ॥ चारि धार  
चीखी सु कड़ कै कर चिसौन मूल ॥ १८४  
न्यास ॥ काठ पिंड अग्र मूल जोग ३६

अग्र २६ अंगुल



लंबाई २० अंगुल

चौबिस पाँच

मूल ३६ अंगुल

चौड़ाई १२ अंगुल



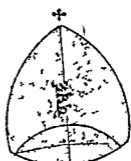
चाल धार

उन्नाई १६ अंगुल

दल १८ लंबाई १०० की घात १८०० पुनि  
 चीरनि ४ करि गुन्यौ ७२०० चौवीसकौ वर  
 ५७६ करि भाग लीनौ पायौ कर प्रमान १५  
 साढ़े वारह हाथ की चिराई की मजूरी दी-  
 जिए ॥ अन्न्य ॥ सम मूलाग्र जु पिंड तिहि  
 करि चौड़ाई घात ॥ पुनि चीरन पुनि हर  
 कहे चौविस कृत करितात ॥ १८५ ॥ उदा-  
 हरन ॥ बतौ सै अंगुल चौड़ाई सो रहे पिंड  
 जुदारु ॥ कै कर आड़ी सो विस्ती. नवें ठां  
 कस्यो विदारु ॥ १८६ ॥ न्यास ॥ चौड़ाई ३  
 पिंड १६ घात ५१२ पुनि चीरन ८ की वध  
 ४६०८ यामें ५७६ की भाग पाए कर ८ ॥  
 अथ राश विवहार ॥ पूल मध्य अउ  
 कन परिधि दस शिवे नव क्रम हारि ॥  
 ताहि परिधि पटलव वरा सौं गुनि घन  
 फल धारि ॥ १८७ ॥ उदाहरन ॥  
 मस धरनी पर अन्न की, राश परिधि जौ

\* स्थूल अन्न बना मकर  
 जय गेहूँ आदि: अनुकूल  
 कृद्विष घाजरा तिल सर  
 सौं आदि: मध्य कन कृदि  
 ए चावर आदि नो कन ॥  
 \* परिधि सै हरकी भाग  
 लीयेतें जो कृत पाइए ता  
 फल की परिधि के छठवें  
 अंश से वरा सौं गुने घन  
 फल पाइए ॥

६० साठ ॥ तहां तीन विधि अन्नके धनफल को  
 कह पाठ ॥ १८८ ॥ न्यास ॥ स्थूलान्न राश  
 परिधि ६० नाको दसौं अंश वैधमयो ६  
 याको परिधि षटलव १० वरा १०० मै गुन्यौ  
 रायौ धन फल ६०० ऐसै अनुधान्न परिधि  
 ६० वैध ६०० सौ १०० मै गुन्यौ ६०१० धन  
 फल ५४५ चावर आदि मध्य धान्न परिधि  
 वैधगुनित ६० सौ १०० गुनित ६००० -  
 धनफल ६६६ ॥ ३ ॥ अन्न्यस्तु ॥  
 भीतरकी कन राशकी परिधि दुगुन करि  
 हरि ॥ भीतरकोन सु चै गुनी, बाहिरकोन  
 सुफेर ॥ १८८ ॥ चारि विलेव गुनि पुनि-  
 सवन पूरव विधि फल लेहु ॥ निज निज  
 गुन तिहि फलहि हरि, सब धन फल  
 कहि देहु ॥ २०० ॥ उदाहरन ॥ भीतादि  
 तकन फल कहौ. परिधि जासु की तीस  
 पंद्रह भीतरकोन की. बाहिर पैतालीस ॥



परिधि ६०

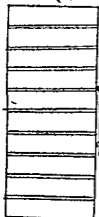
वैधकहिए समगुनिते  
 राश्याशकी उंचाई ॥

भीतरकी राश



५८  
 लीलावती  
 भाग ५

चौड़ाई १२ अंगुल



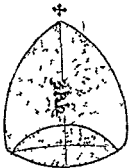
चौड़ाई

उन्चाई १६ अंगुल

दल १८ लंबाई २०० की घात १८०० पुनि  
 चीरनि ४ करि गुन्यौ ७२०० चौवीसकौ वर  
 ५७६ करि भाग लीनौ पायौ कर प्रमान १९  
 साढ़े बारह हाथ की चिराई की मजूरी दी  
 जिए ॥ अन्य ॥ समभूलागु जु पिंड तिहि  
 करि चौड़ाई घात ॥ पुनि चीरन गुनि हर  
 कहे चौविस कृत करितात ॥ १८५ ॥ उदा-  
 हरन ॥ वरिसे अंगुल चौड़ाई सोरह पिंड  
 जुदारु ॥ कैकर आड़ी सो विस्यौ नव ठां  
 कस्यौ विदारु ॥ १८६ ॥ न्यास ॥ चौड़ाई  
 पिंड १६ घात ५२२ पुनि चीरन ८ की वध  
 ४६०० यामें ५७६ की भाग पाए कर ८ ॥  
 अथ राश विवहार ॥ पूल मध्य अउ  
 कन परिधि दस शिव नव क्रम हारि ॥  
 ताहि परिधि पटलव बरग सौं गुनि घन  
 फल धारि ॥ १८७ ॥ उदाहरन ॥  
 सम धरनी पर अन्न की राश परिधि जौ

\* स्थूल अन्न चना मटर  
 जव गेहूं आदि: अनुकूल  
 कठिण बालग तिल सर  
 सी आदि: मध्य कन कहि  
 ए चावर आदि जो कन ॥  
 \* परिधि में हरकी भाग  
 लीयेतें जो फल पाइए ता  
 फल की परिधि के छठवें  
 अंश के बरग सौ गुने घन  
 फल पाइए ॥

साठ ॥ तदां तीन विधि अन्नके धनफल को  
 कह पाठ ॥ १८८ ॥ <sup>+</sup>न्यास ॥ स्थूलान्न राश  
 परिधि ६० नाकौ दसौं अंश वेधमयो ६  
 याको परिधि षटलव १० चरग १०० मै गुन्यौ  
 पायौ धन फल ६०० ऐसैं अनुधान्न परिधि  
 ६० वेध ६० सौ १०० मै गुन्यौ ६३३ चन  
 फल <sup>५६५</sup> ११ चावर आदि मध्य धान्न परिधि  
 वेधगुनित ६० सौ १०० गुनित ६००० -  
 घनफल ६६६ १३ ॥ <sup>+</sup>अन्यस्तु ॥  
 भीतलगी कन राशकी परिधि दुगुन करि  
 हेर ॥ भीतर कोन सु चौगुनी, बाहिर कोन  
 सुफेर ॥ १८८ ॥ चारि बिलेव गुनि पुनि-  
 सवन पूरव विधि फल लेहु ॥ निज निज  
 गुन तिहि फलहि हरि, सब घन फल  
 कहि देहु ॥ २०० ॥ उदाहरन ॥ भीताश्रि  
 त कन फल कहौ, परिधि जासु की तीसैं  
 मद्रह भीतर कोन की, बाहिर पैतालीस ॥



परिधि ६०

वेध कहिए समभूमि मै  
 राश्याश्र की उंचाई ॥

<sup>+</sup>  
भीतलगीराश



भीतर कोन  
 बाहिर राशकी



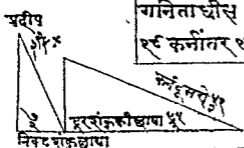
\* पहिल गुणक ३  
दूसर गुणक ६  
तीसर गुणक ९

\* भाकहीर छाया

\* शंकु अग्र तें छाया अग्र  
पर्वत दूज को नाम नया  
सुन करन ही जो कोइ  
दीपक नोति से ही शंकु तें  
रखे की दीप निकट शंकु  
कि छाया की अग्र दूज  
रे शंकु के मूल से लागे  
अरु दोनो शंकु की छा  
या तथा तथा करन भा  
मिके दोनो छायांतर का  
कर्नांतर कहि देह और  
छाया दोनो की प्रमान  
वै ताकी यह दूज है ॥

२०१ ॥ न्यास ॥ आदि ३० की दूजी ६० दूसरी  
१५ की चौथी ६० तीसरी ४५ की ६० गुनी ६०  
तीनो साठ को पूरव दिधि क्रिया करि पायो  
फल ६०० निज निज गुन को यामें भागलीते  
पायो घन फल ३० १५० ४५० ॥

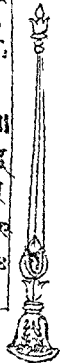
अथ छाया विदहार ॥ आंतर अति  
अंतर बरया. तिनको अंतर जोइ ॥ ताकरि  
भाग गुली जिये, चौविस कृत भै सोइ ॥ २०२  
॥ फल नें चुत करि एक पुनि मूल अन्त  
घात ॥ तानें आंतर घाट दल. निकट छाया  
यिख्यात ॥ २०३ ॥ दूजी छाया दूर ही आंतर  
जुत दल होइ ॥ बीज गणित धित पति  
जिन्हें आउत पति कहै सोइ ॥ २०४ ॥  
उदाहरण ॥ फणोंतर तेरह बहुर छाया  
तर उन्नीस ॥ दुहुं शंकु की भाकही. जो तुम  
गनिता थीस ॥ २०५ ॥ न्यास ॥ छायांतर  
२६ कर्नांतर १३ दोउन के वर्गन को अंतर



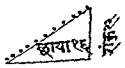
१८२ या करि चौबीस के वरग ५७ ६ में भाग  
 फल ३ एक जीत्यो ४ मूल २ कर्नांतर १३ सौं  
 गुन्यौं २६ में छायांतर १८ चाटि जेप ७ दल  
 ३ यह दीप निकट शंकु की छाया भई और  
 २६ में १८ जीतादल पाई दूसरे शंकु की  
 छाया ४५ और कर्न मिति को ज्ञान चाहिए  
 नौ मूल २ को छायांतर १६ में गुनि ३८ में  
 कर्नांतर जुत घट दल पाइये कर्न मिति  
 ३५ । ५२ ॥ अथ दीपोच्च ज्ञानार्थ  
 सूत्र ॥ शंकु दीप तल अंतरै गुनौ शंकु  
 करि जानि ॥ आ करि हरि पुनि शंकु जुत  
 दीप उंचाई जानि ॥ २०६ ॥ उदाहरण ॥  
 दीप तलांतर शंकु सौं अंगुल सतर दोइ  
 ॥ सौरह भारवे शंकु निहिं दीप उच्च  
 कह सोइ ॥ २०७ ॥ न्यास ॥ ५७ ७२ शंकु १२  
 गुनि ८६४ में छाया १६ को भाग फल ५४  
 शंकु १२ जुत पाई दीप उंचाई ६६ ॥

\* ता शंकु की छाया प्रमान  
 और शंकु प्रमान और  
 शंकु तै दीप तलांतर को  
 प्रमान जानिए वहां की  
 बीच जानिये को सूत्र ॥

\*



दीप उंचाई सूत्र



दीप तल तै शंकु तलांतर १२ अंगुल



वसु बरिह द्वै छाह ॥ दीपतरांतर उच्च पुनि  
 कही समरि मनसाह ॥२१२॥ न्यास ॥  
 दुहं शंकुको अंतर द्वै करके अंगुल ४८-  
 दूसरी छाया १२ जोरे तें ६० में प्रथम छाया  
 ८ घटाये तै पायो छाया अग्रांतर ५२ को  
 प्रथम भा ८ सौं गुनि ४१६ में छायांतर ४ को  
 भागफल १०४ में छाया ८ घटाये तें शेष  
 पायो दीपतल तें प्रथम शंकु तलांतर भूमि  
 ६६ यामें द्वै करके ४८ अंगुल जोरे तें पायो  
 दूसरी भूमि मान १४४ अथवा छायांतर ५२  
 छाया १२ गुनित ६२४ में अंतर ४ को अ ३  
 १५६ में १२ छाया घटाये तें वही १४४ दोनै  
 भूम ६६। १४४। यह शंकु गुनित ११५२।  
 १७२८ में छाया ८। १२। को भागफल १४४।  
 १४४। शंकु जोरे तें पाई दुह शंकुते दी-  
 पोच्चता १५६। १५६। में २४ को भाग लीये  
 तें पाइये दीपोच्च कर प्रमान ६

+  
 दीपोच्च १५६



१५६  
 शंकु

दीपोच्च १५६

निकट शंकु तल तें दीपनलावर ६

दोनो अंतर दो अंतर ८

श्रीमन्मृगतिरायडालचंद्रस्याज्ञा  
परिपालक रायचंद्र नागरेणपि  
चित पाटी परिपाठ्यानु सरिण्य  
गणितसार ग्रंथे छायाव्यवहार  
वर्णनं सप्तमः प्रकाशः ॥  
दोहराखंड

प्रभुप्रगाप पूरन भयोद्भ्रतुव ग्रंथ रत्नाल ॥  
अनुभव रत्न सुख सिंधु यह पूरन गनि ननि  
जाल ॥ २१३ ॥ विक्रम सम्यत् २८२८ राज  
जुगल, वसु ससि शुक्लवार ॥ सांवनसित  
सातै सुखद गनितसार अवतार ॥ २१४ ॥  
संपूरन पोथी लिरयी. लिखयह आशिष  
दीन ॥ पिय मन रुचि कारन रुचिर, चिस्  
लीं होरु नवीन ॥ २१५ ॥ तिथ तेरस  
पुम नरदव पित, माह माह रवि वार ॥  
भवो भेट रुपगाप के, गनित सुधारस  
सार ॥ २१६ ॥ रत्नालार हरसोहन दास ॥